RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
वर्ष-13, अंक-03, हिन्दी (मासिक), मार्च 2026, पृष्ठ 16, मूल्य- 17:50

13 संस्था असंख्य लोगों को शांति, स्थिरता और आध्यात्मिक...

ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना के 90 वर्ष: देशभर में निकाली जाएंगी 21 रथ यात्रा

12 मुख्य ज्योतिर्लिंग और 10 प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग की झांकी सजाई जाएगी

साधना पथ के 90 वर्ष

नवदशकोत्सव

वर्ष 1936 से 2026 का दिव्य सफर

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

वर्ष 1936 में अध्यात्म की एक ज्योति प्रज्जवलित हुई, जिसके दिव्य प्रकाश, आभा, सकारात्मक और पवित्र ऊर्जा ने संकल्प से सिद्धी की महान यात्रा को साकार किया। उस ज्योति का स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का संकल्प आज सामाजिक परिवर्तन का केंद्रबिंदु बनकर समूचे विश्व को दिव्य ज्ञान की रोशनी से प्रकाशित कर कर रहा है। यह ज्योति थी ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना, जिनके प्रेरणास्त्रोत थे दादी लेखराज, जिन्हें प्यार से सभी ब्रह्मा बाबा के नाम से जानते हैं। अपनी 90 वर्ष की यात्रा में ब्रह्माकुमारीज़ ने आध्यात्मिक ज्ञान, राजयोग की शक्ति, सेवा साधना और उच्च चारित्रिक मूल्यों के बल पर लाखों लोगों के जीवन को प्रकाशमय किया है। सेवा की इस तपस्थली में हजारों लोग समर्पित भाव से विश्व शांति के स्वप्न को साकार करने में तपस्यारत हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ के 90 वर्ष पूर्ण होना हम सभी के लिए अत्यंत हर्ष और कृतज्ञता का अवसर है। यह यात्रा पवित्रता, त्याग, तपस्या और नि:स्वार्थ सेवा की अमिट गाथा रही है। परमात्मा की श्रीमत और राजयोग की शक्ति ने अनगिनत आत्माओं के जीवन में प्रकाश जगाया है। स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन का यह दिव्य अभियान और तीव्र गति से आगे बढ़े, इसी शुभकामना के साथ हम सब नए उत्साह से सेवा में अग्रसर रहें।

- राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

संस्था के 90 वर्ष सेवा, साधना और समर्पण के स्वर्णिम अध्यायों से परिपूर्ण हैं। यह कालखंड दर्शाता है कि पवित्र संकल्प और ईश्वरीय मार्गदर्शन से असंभव भी संभव बनता है। संगठन के प्रत्येक भाई-बहन ने अपने श्रेष्ठ कर्मों द्वारा इस यात्रा को सफल बनाया है। आज जब विश्व अनेक चुनौतियों से गुजर रहा है, तब राजयोग की शिक्षा और भी प्रासंगिक हो गई है।

- राजयोगी बीके करुणा भाई, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज

ब्रह्माकुमारी परिवार ने हर परिस्थिति में धैर्य, साहस और सकारात्मकता बनाए रखकर समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना की है। सब संकल्प लें कि मानवता को शांति, प्रेम और सद्भाव का संदेश और अधिक व्यापक रूप से पहुँचाएंगे।

- राजयोगी बीके डॉ. मृत्युंजय भाई, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारी

माउंट आबू@ ब्रह्मा बाबा के साथ भाई-बहनें।

1936 में ब्रह्माकुमारीज़ की हैदराबाद सिंध प्रांत से स्थापना की गई

1950 से माउंट आबू से देश-विदेश में सेवाओं का विस्तार

50 हजार से अधिक ब्रह्माकुमारी बहनें सेवा में समर्पित

25 लाख से अधिक बीके भाई-बहनें विद्यार्थी, जीवन बना राजयोगी

06 हजार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र देश-विदेश में संचालित

140 देशों में दिया जा रहा है राजयोग मेडिटेशन का संदेश

20 प्रभागों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को जोड़ रहे

07 पीस मैसेंजर अवार्ड यूएनओ से ब्रह्माकुमारीज़ को मिले

02 लाख से अधिक ब्रह्मचारी युवा बने सेवा साथी

20 सूत्रीय कार्यक्रम से सामाजिक सेवाओं से जन-जन को कर रहे लाभांवित

ब्रह्माकुमारी की सामाजिक सेवाएं

ब्रह्माकुमारी 90 वर्षों से समाज के सभी वर्गों के उत्थान, सशक्तिकरण और विकास के लिए समर्पित रुप से कार्य कर रही है। समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने के लिए देशभर में मूल्य शिक्षा, राजयोग थॉट लैब, थ्रीडी हार्टकेयर, रिवर्स डायबिटीज, नशामुक्त भारत अभियान, विहासा- वैल्यु इन हेल्थकेयर, दिव्य गर्भ संस्कार, रक्तदान, स्वास्थ्य शिविर, मेरा भारत स्वस्थ भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर किसान अभियान, यौगिक खेती अभियान, यौगिक गृह वाटिका अभियान, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, जेल सुधार, स्वच्छ भारत मिशन, गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन आदि अभियान चलाए जा रहे हैं।

रथ यात्रा

21 रथ यात्रा एक साथ दिल्ली से रवाना होंगी

50 हजार किमी की यात्रा करेंगी तय

21 हजार गांव, कस्बों, शहरों को करेंगी कवर

पूरे विश्व में मनाया जाएगा नवदशकोत्सव

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की स्थापना के 90 वर्ष पूर्ण होने पर विश्वभर में नवदशकोत्सव बड़े ही धूमधाम और व्यापक स्तर पर मनाया जाएगा। इस दौरान मुख्य रूप से दिल्ली से एक साथ देश के कोने-कोने के लिए 21 रथ यात्राएं निकाली जाएंगी, प्रत्येक रथ को बड़े ही सुंदर तरीके से सजाया जाएगा, जिसमें एक-एक ज्योतिर्लिंग का संदेश और ऐतिहासिक महत्व को बड़े ही कलात्मक तरीके से प्रदर्शित किया जाएगा। इन रथ यात्राओं का शुभारंभ सितंबर-2026 में दिल्ली से किया जाएगा, वहीं समापन समारोह दिसंबर में संस्थान के मुख्यालय शांतिवन आबू रोड में आयोजित किया जाएगा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा वर्ष 2026 को नवदशकोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। इसके तहत सेवाकेंद्रों पर सभा, सम्मेलन, कॉन्फ्रेंस, संत सम्मेलन, गोष्ठी आदि का आयोजन किया जाएगा। जिसमें संस्थान की 90 वर्ष की यात्रा की प्रमुख उपलब्धियों को बताया जाएगा।

स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के विचार से विश्वभर में आई क्रांति

श्वेतवस्त्रधारिणी, बालब्रह्मचारिणी, राजयोगिनी, तपस्विनी ब्रह्माकुमारियों ने यह साबित कर दिखाया है कि यदि नारी को मौका मिले तो वह पुरुषों से बेहतर कार्य कर सकती हैं। वह अदम्य साहस, शक्ति और सामर्थ्य से भरपूर है। ब्रह्माकुमारियों के त्याग और तपस्या का परिणाम है कि आज आध्यात्म की गूंज सारे विश्व में सुनाई दे रही है। हर कोई ध्यान की पद्धति सीखने, समझने और आत्मसात करने के लिए लालायित है। क्योंकि मानसिक व्याधियों के लिए राजयोग ध्यान के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का एक विचार आज क्रांति बनकर गूंज रहा है। परमात्मा से महामिलन कराने में ब्रह्माकुमारियां शांतिदूत बनकर जन-जन को जगा रही हैं।

दुनिया का एकमात्र और सबसे बड़ा संगठन

ब्रह्माकुमारी संस्थान नारी शक्ति द्वारा संचालित दुनिया का सबसे बड़ा और एकमात्र संगठन है। यहां मुख्य प्रशासिका से लेकर प्रमुख पदों पर महिलाएं ही हैं। नारी सशक्तिकरण का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि यहां भाई भोजन बनाते हैं और बहनें बैठकर भोजन करती हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ चारों दिशाओं में शिव का सात्विक तत्व फैला रही है, भारत बनेगा अध्यात्म का लीडर : केंद्रीय मंत्री मेघवाल

90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव: केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने किया शुभारंभ

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की स्थापना के 90 वर्ष पूर्ण होने पर इस वर्ष देश-विदेश में 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है। संस्थान द्वारा महाशिवरात्रि पर विश्वभर में 51 हजार कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मुख्यालय शांतिवन में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में भारत सरकार के केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने शिवलिंग पर जल और दूध से अभिषेक कर पूजन किया। कार्यक्रम में मप्र और छग से आए 15 हजार से अधिक लोग मौजूद रहे।

महोत्सव में केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ चारों दिशाओं में शिव का सात्विक तत्व फैला रही है। आज हम सभी को यह भाव अपने अंदर लाने की जरूरत है कि यह मेरा भारत है। हमें भारत अपना लगना चाहिए। आज सबसे ज्यादा मूल्य आधारित समाज बनाने की जरूरत है। इसके लिए समाज को जागरूक करने की जरूरत है। जब हमारी यह भावना हो जाएगी कि यह देश मेरा है, यह समाज मेरा है तो हम गंदगी नहीं करेंगे और भारत को विकसित करने के लिए कार्य करेंगे। जब यह भावना विकसित हो जाएगी तो तीसरा नेत्र जागृत हो जाएगा। सबसे ज्यादा सात्विक मूल्यों की ताकत भारत में ही विद्यमान है।

उन्होंने कहा कि जो आध्यात्मिक ज्ञान भारत के पास है वह विश्व के दूसरे देशों के पास कम है। जो कार्य ब्रह्माकुमारीज़ कर रही है, संसार में ऐसे लोग कम हैं। भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जो आध्यात्मिकता को लेकर लीडरशिप कर सकता है। आज संसार में जो आध्यात्मिक क्षेत्र में लीडरशिप करता है तो वह भारत का ही होता है। उन्होंने वो भारत देश है मेरा.... गीत की लाइनों को गाते हुए कहा कि जहां सूरज की सबसे पहले रोशनी पड़ती है वह स्थान हमारे ही देश में है, वह अरुणाचल प्रदेश है। कभी सोचा नहीं था भगवान मिलेगा गीत की लाइनों को इंगित करते हुए केंद्रीय मंत्री मेघवाल ने कहा कि मेरा यहां आने में कई परिस्थितियां बनीं लेकिन भगवान की प्लानिंग थी तो मैं यहां पहुंच गया।

नारी के नेतृत्व से ही भारत बनेगा विश्व गुरु-

भारतीय सर्व धर्म संसद के राष्ट्रीय संयोजक महर्षि भृगु पीठाधीश्वर गोस्वामी सुशील महाराज ने कहा कि ब्रह्मा बाबा ने जो नारी सशक्तिकरण करके दिखाया ये कार्य अन्य कोई नहीं कर सकते हैं। अगर भारत को विश्व गुरु बनाना है तो नारियों के हाथ नेतृत्व देकर ही ये किया जा सकता है। भारतीय सर्व धर्म संसद भी विश्व बंधुत्व का कार्य कर रही है। जहां भी इस कार्य के लिए विदेशों में भी जाते हैं, ब्रह्माकुमारीज़ का केंद्र मिल जाता है और आप लोगों से मिलना होता है। एक बार मैंने एक अधिवेशन में पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल और राजमाता भी उपस्थिति में कहा कि नारी सशक्तिकरण तब सिद्ध होगा जब देश के सर्वोच्च पद पर नारी विराजमान होगी, तो दो दिन बाद ही प्रतिभा पाटिल का राष्ट्रपति पर चयन हो गया। आज भी जो राष्ट्रपति हैं वो भी आप सब के बीच में से हैं।

ये भी रहे मौजूद-

महोत्सव में राजयोगिनी जयंती दीदी ने केंद्रीय मंत्री को शॉल पहनाकर और परमात्मा का स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया। इस मौके पर मंच पर लंदन से आए बीके नेविल भाई, इंदौर जोन की निदेशिका बीके हेमलता दीदी, शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका बीके शिविका बहन भी मौजूद रहीं। वहीं मानपुर हवाई पट्टी पर विधायक समाराम गरासिया, पूर्व विधायक जगसीराम कोली, एसपी प्यारे लाल, एसडीएम अंशुप्रिया, भाजपा के प्रदेश मंत्री नारायण पुरोहित सहित ब्रह्माकुमारीज़ के प्रतिनिधियों और भाजपा नेताओं ने मंत्री का स्वागत किया। संचालन छग धमतरी की बीके सरिता दीदी ने किया। मप्र के नरसिंहपुर से आईं बालिकाओं ने ऊं नमः शिवाय गीत पर प्रस्तुति देकर महोत्सव में समां बांध दिया।

शिव ज्योतिर्बिंदु हैं, कल्याणकारी हैं...

- अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि आज हम सभी शिव बाबा का जन्मदिन मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। शिव ज्योतिर्बिंदु हैं, कल्याणकारी हैं और इस सृष्टि के बीज रुप हैं। जब हम ज्ञान का प्रैक्टिकल जीवन में उपयोग करते हैं तो हमारी आध्यात्मिक उन्नति होती है। ज्ञान का मतलब है चढ़ती कला अर्थात् निरंतर उन्नति की ओर बढ़ना। परमात्मा शिव ही हम सभी आत्माओं के माता-पिता, बंधु और सखा हैं। परमात्मा को जानने के बाद हमें जीवन में कुछ पाना शेष नहीं रह जाता है।
- अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि आज का दिन ब्रह्माकुमारी के इतिहास में एक स्वर्णिम दिन है क्योंकि आज के दिन परमात्मा शिव ने साकार मनुष्य तन का आधार लेकर अज्ञानता का अंधकार दूर करने के लिए ज्ञान का दीप प्रज्जवलित किया था। उन्होंने केंद्रीय मंत्री से शराब की दुकानों को बंद करवाने का आग्रह भी किया।

हमारी सरकार दंड संहिता से न्याय संहिता लाई

केंद्रीय मंत्री मेघवाल ने कहा कि आज देश के कानूनों में तेजी से सुधार हो रहा है। अब तक हम अंग्रेजों के बनाए कानून चला रहे थे। लेकिन हमारे प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें इन कानूनों में सुधार करना है। अंग्रेजों को भारतीयों के लिए दंड देना था इसलिए वह दंड संहिता लेकर आए, लेकिन हमें अपने देश के लोगों को न्याय देना है इसलिए हम न्याय संहिता लेकर आए हैं। 1 जुलाई 2024 से पूरे देश में भारतीय दंड संहिता की जगह भारतीय न्याय संहिता लागू हो गई है। सीआरपीसी की जगह भारतीय सुरक्षा अधिनियम लागू हो गया। इस तरह हमारी सरकार ने अनेक अंग्रेजों के समय के कानूनों को बदला है।

डेढ़ माह चलेगा शिव जयंती महोत्सव

बता दें कि 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव के तहत संस्थान के रिट्रीट सेंटर से लेकर सेवाकेंद्र, उपसेवाकेंद्र और पाठशालाओं में डेढ़ माह तक शिव जयंती महोत्सव मनाया जाएगा। इस दौरान शिव ध्वजारोहण कर लोगों को शिव ध्वज के नीचे बुराइयों छोड़ने, व्यसन-विकारों से दूर रहने की प्रतिज्ञा कराई जाएगी। देश-विदेश में 51 हजार से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

विज्ञान भवन में 'कर्मयोग फॉर एम्पावर्ड भारत' कार्यक्रम का राष्ट्रपति ने किया शुभारंभ

निःस्वार्थ भाव, कर्तव्य और जिम्मेदारी के साथ किया कार्य ही सच्चा कर्मयोग

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विज्ञान भवन में 'कर्मयोग फॉर एम्पावर्ड भारत' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कर्मयोग के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा कि निःस्वार्थ भाव, कर्तव्य और जिम्मेदारी के साथ किया गया कार्य ही सच्चा कर्मयोग है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र-निर्माण का आधार केवल नीतियां नहीं हैं, बल्कि उन नीतियों को लागू करने वाले लोगों की निष्ठा, पारदर्शिता और सेवा भावना है। राष्ट्रपति ने नैतिक प्रशासन (एथिकल गवर्नेंस) और नागरिक-केंद्रित सेवा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि जब शासन व्यवस्था में संवेदनशीलता, जवाबदेही और ईमानदारी का समावेश होता है, तभी आम नागरिकों का विश्वास सुदृढ़ होता है। यह विश्वास ही सशक्त भारत (एम्पावर्ड भारत) की नींव है। उन्होंने सभी हितधारकों सरकारी अधिकारियों, सामाजिक संगठनों, युवाओं और नागरिकों से आह्वान किया कि वे अपने-अपने क्षेत्र में कर्मयोग की भावना को अपनाएं। प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने कर्तव्य को राष्ट्र-सेवा मानकर निभाए, तो भारत आत्मनिर्भर, नैतिक और सशक्त राष्ट्र के रूप में और अधिक प्रगति करेगा। कार्यक्रम में कर्मयोग के सिद्धांतों को व्यवहार में उतारने, पारदर्शी प्रशासन को बढ़ावा देने और सामूहिक प्रतिबद्धता के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण को गति देने पर विचार-विमर्श किया गया। वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि आध्यात्मिक मूल्यों और नैतिक दृष्टिकोण के साथ किया गया कार्य ही स्थायी परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है। साथ ही यह संदेश दिया कि सशक्त भारत का निर्माण केवल योजनाओं से नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक के कर्तव्यनिष्ठ, जिम्मेदार और निःस्वार्थ कर्म से संभव है। इस मौके पर बिहार के राज्यपाल आरिफ़ मोहम्मद ख़ान, संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, प्रशासक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके हरीश भाई सहित बड़ी संख्या में भाई-बहनें मौजूद रहे।

होली पर विशेष...

पवित्रता का रंग खुशियों के संग

स्थान, वस्तु, व्यक्ति और विचार किसी भी रूप में हो पवित्रता सभी को भाती है। क्योंकि आत्मा का मूल संस्कार, दिव्यगुण युक्त और प्रकृति पवित्र स्वरूप है। सृष्टि के आरंभ में इसका स्वरूप स्वाभाविक रूप से पवित्र था। हर चीज सौ फीसदी खरी और शुद्ध। आज सृष्टि में चारों ओर अपवित्रता, आसुरीयता और अति की पराकाष्ठा से हर चीज गुजर रही है। आत्मा जो स्वर्णिम काल में सौ फीसदी खरी, सत्वगुण से युक्त और सतोप्रधान थी, उसे आज अपवित्रता के आवरण ने इस तरह ढक लिया है कि अपना मूल संस्कार, पवित्र स्वरूप स्मृति पटल से विस्मृत हो गया है। ऐसे में समय में आत्मा को फिर से पवित्रता के रंग में रंगने, पवित्रता के सागर परमात्मा परमधाम से पधारकर पवित्रता की गंगा में डुबकी लगवा रहे हैं। परमात्मा ने गीता में स्पष्ट कहा है कि जब-जब इस धरा पर अपवित्रता की आंधी अपने चरम पर होती है, तब-तब मैं फिर से पवित्र दुनिया की स्थापना करने, आत्मा को पवित्रता की राह दिखाने अवतरित होता हूं। दुनिया को अब तक किसी चीज ने बांधे रखा है तो वह है पवित्रता का बल।

पवित्रता दुनिया का सबसे बड़ा बल

वर्तमान में यह वही समय चल रहा कि जब हमें इस यथार्थ सत्य को अंतस से स्वीकार कर खुद के पवित्र स्वरूप में टिकने की जरूरत है। क्योंकि पवित्रता ही दुनिया की वह शक्ति है जिसके बल से इस अपवित्र दुनिया को फिर से पवित्र, पावन, सतयुगी दुनिया बनाया जा सकता है। दुनिया में यदि ऋषि-मुनि, संत-महात्माओं को गायन- सम्मान योग्य और उनके आचरण को धारण करने योग्य समझा जाता है तो उसके पीछे मूल भाव उनके जीवन का पवित्रमय होना है। पवित्रता दुनिया सबसे बड़ा बल, पूंजी और शक्ति है।

राजयोग की शिक्षा ही एकमात्र उपाय

मनुष्य आत्माओं को फिर से पवित्रता के रंग में रंगने परमात्मा का यही संदेश है कि हे! आत्माओं मुझसे योग लगाओ तो मैं तुम्हें जन्मोंजन्म के लिए पवित्र दुनिया का मालिक बना दूंगा। सृष्टि परिवर्तन के इस संधि काल में भी यदि हमने इस यथार्थ सत्य को नहीं स्वीकारा, परमात्मा की इस शिक्षा को शिरोधार्य नहीं किया तो फिर पूरे कल्प के लिए उस परम पवित्र दुनिया के साक्षी बनने से वंचित रह जाएंगे। क्योंकि पूरे कल्प में एक ही बार परमसत्ता, सर्वोच्च सत्ता का अवतरण होता है। परमात्मा के इस आह्वान, सत्य ज्ञान को आज लाखों लोगों ने दिल से स्वीकारा है, उनकी श्रीमत को शिरोधार्य कर जीवन को पवित्रमय बनाकर संयम पथ पर बढ़ते जा रहे हैं। राजयोग की शिक्षा ही आत्मा के पवित्र स्वरूप को फिर से जागृत करने, आत्मा पर लगी विषय-विकारों की जंक को साफ करने और फिर से पावन बनाने का एकमात्र रास्ता और उपाय है।

खुशियों के संग...

जब जीवन में स्थायित्व आ जाता है। सत्य ज्ञान से हमारा परिचय हो जाता है तो फिर आत्मा और मन खुशी से भर जाता है। क्योंकि जिसने भी परमात्मा की दिव्य अनुभूति कर ली उसे फिर कुछ पाने के लिए शेष नहीं रह जाता है। परमात्मा कहते हैं मेरे बच्चों जीवन में सबकुछ चला जाए लेकिन खुशी न जाए। खुशी आत्मा का गहना, शृंगार और शोभा है। आपका खुशनुमा जीवन अनेकों के लिए प्रेरणा दिलाता है। उन्हें प्रभु से जोड़ने के लिए लालायित और उत्साहित करता है। खुशी संतुष्टता की निशानी है और प्रभु से मिला वरदान है। जीवन का आधार और कर्म-धर्म का सार खुशी ही है। खुशी की गोली खाओ, जीवन को आनंदमय बनाओ।

मैं आत्मा, परमात्मा की होली....

होली अर्थात् पवित्र। होली का त्योहार अपने आप में कई महान आध्यात्मिक रहस्यों को समेटे हुए है। जो हमें संदेश देता है कि दुनिया में सबसे प्यारा, गहरा और स्थायी रंग है तो वह है परमात्म प्रेम का रंग। इस रंग में जो आत्मा एक बार रंग कर सराबोर हो जाती है तो उसका जीवन रंगमय, खुशनुमा बन जाता है। खुशी, उमंग-उत्साह, उल्लास का प्रतीक होते हैं। इस होली पर एक संकल्प हमारा हो कि आपस में बैर, बुराई, गले-शिकवे भुलाकर, मन के मैल को खुशी के रंग से धो डालते हैं। यह रंग पर्व आपके जीवन में नई उमंग, नव उत्साह और नव साहस लेकर आए और जीवन को खुश रंग बनाए। इस बार होलिका दहन के साथ जीवन में कांटों के समान चुभने वाली बातें, गलत आदतें और संस्कारों को स्वाहा कर उन्हें सदा के लिए तिलांजली दे दें। क्योंकि आपके जीवन को नव प्रकाश से भरने उसे खुशियों के रंग में रंगने परमात्मा नवदुनिया की सौगात लेकर आए हैं और यही संदेश दे रहे हैं अब घर चलना है....

महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में देश-विदेश में डेढ़ माह में होंगे 51 हजार कार्यक्रम

90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव घर-घर लहराया जाएगा शिव ध्वज

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा महाशिवरात्रि पर्व से शुरू हुए 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव देश-विदेश में डेढ़ महीने तक मनाया गया। संस्थान द्वारा इस दौरान 51 हजार से अधिक कार्यक्रमों के साथ एक नया कीर्तिमान बनाया जाएगा। यह कार्यक्रम संस्थान के रिट्रीट सेंटर, सेवाकेंद्र, उपसेवाकेंद्र और पाठशालाओं में आयोजित किए जाएंगे।

मुख्य कार्यक्रम मुख्यालय शांतिवन परिसर में आयोजित किया गया। यहां मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मोहिनी दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी व राजयोगिनी जयंती दीदी, महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. मृत्युंजय भाई ने सौ फीट ऊंचे शिव ध्वज को फहराकर सभी को शिव जयंती की बधाई दी। इस मौके पर मप्र, छग सहित विदेश से आए 15 हजार से अधिक लोग मौजूद रहे। शिव ध्वज के नीचे सभी को जीवन नकारात्मक विचारों, दुर्गुणों, बुराइयों से दूर रहने और सभी के प्रति शुभ भावना-शुभ कामना रखने का संकल्प कराया गया।

महोत्सव में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मोहिनी दीदी ने कहा कि आज के दिन विश्वभर के 140 देशों के सेवाकेंद्रों पर शिव झंडा लहराया जा रहा है। आज का दिन विशेष रूप से सभी सेवाकेंद्रों पर शिव जयंती के रूप में मनाया जाता है। परमात्मा की हम बच्चों से यही आश है कि सदा दृढ़ता की चाबी से आगे बढ़ते रहें। दृढ़ता

के साथ तीव्र पुरुषार्थ करें तो आगे बढ़ते रहेंगे। हमने जो बाबा से वायदा किया है तो आज यह प्रतिज्ञा करते हैं कि सदा समर्थ सोचेंगे, सदा समर्थ कर्म करेंगे। अपना समय परमात्मा शिव बाबा की याद में ज्यादा से ज्यादा सफल करें और सफलता पाएं।

परमात्मा की आस को पूरा करके रहेंगे

महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि हम कितने भाग्यशाली हैं कि परमात्मा के महावाक्य सुनने का अवसर मिलता है। अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि आज के दिन सभी प्रतिज्ञा करें कि परमात्मा की जो हम सभी से आस है उसे पूरा करके ही रहेंगे। सभी संकल्प करें कि सदा शिव बाबा का गुणगान करते हुए आगे बढ़ते रहेंगे। परमात्मा की शुभ आस है कि आपके पास जो भी आए तो वह गुण ग्रहण करके और खुशी लेकर जावें। सभी को शिव ध्वज के नीचे प्रतिज्ञा कराई गई।

इन परिसरों में भी किया गया झंडावंदन: माउंट आबू स्थित पांडव भवन, ज्ञान सरोवर, पीस पार्क, आबू रोड स्थित मनमोहिनीवन परिसर, आनंद सरोवर, पीएम पार्क, तपोवन, सोलार और मान सरोवर परिसर में भी शिव ध्वज फहराया गया। इन कार्यक्रमों में बीके शीलू दीदी, बीके मोहन सिंघल, बीके गीता दीदी, बीके शारदा दीदी, बीके रुक्मिणी दीदी, बीके आत्मप्रकाश भाई, समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई, वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई, आवास-निवास के प्रभारी बीके देव भाई सहित हजारों लोग मौजूद रहे। मधुरवाणी ग्रुप की टीम ने गीत प्रस्तुत किया।

सतधर्म की स्थापना के कार्य में सदा सहयोगी रहें

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी ने कहा कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना का कार्य 90 वर्ष तक पहुंच गया है। दुनिया परिवर्तन का यह कार्य निरंतर जारी है। सतधर्म की स्थापना के कार्य में सदा शिव बाबा का सहयोगी बनकर आगे बढ़ते रहें। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि हम बच्चों का फर्ज है कि परमात्मा का दिव्य संदेश दुनियाभर में देना है। लोगों को दुख, दर्द से बाहर निकलने का रास्ता बताना है। परमात्मा इस धरा पर आ चुके हैं यह संदेश सभी को बताना है।

मीडिया कर्मियों के लिए 'कर्मयोगा इन एक्शन' कार्यक्रम का शुभारंभ

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली।

मीडिया जगत के पेशेवरों के लिए आयोजित विशेष कार्यक्रम कर्मयोगा इन एक्शन का भव्य शुभारंभ राज्य मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय एल. मुरुगन की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य मीडिया कर्मियों को अपने दायित्वों का निर्वहन आत्म-जागरूकता, नैतिकता और आध्यात्मिक मूल्यों के साथ करने की प्रेरणा देना था। अपने संबोधन में मुख्य अतिथियों ने कहा कि जब कर्तव्य आत्मचेतना और नैतिक मूल्यों के साथ निभाए जाते हैं, तो साधारण कर्म भी सेवा और साधना का रूप ले लेते हैं।

मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाली सशक्त शक्ति है। इसलिए पत्रकारिता में सत्यनिष्ठा, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी अत्यंत आवश्यक है। संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयन्ती दीदी ने कहा कि सच्चा कर्मयोग वही है, जिसमें व्यक्ति अपने कार्य को ईश्वर स्मृति और सेवा भावना के साथ करता है। इससे कार्य में शांति, संतुलन और सकारात्मक प्रभाव स्वतः प्रकट होता है।

कार्यक्रम में विशिष्ट पैनल के रूप में वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं मीडिया विशेषज्ञ केजी सुरेश, जगदीश चन्द्रा, संदीप मारवाह, महिला प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी चक्रधारी दीदी, अमेरिका से आई आध्यात्मिक वक्ता जुडी रॉजर्स, चिकित्सक एवं मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. मोहित गुप्ता, सांसद रत्न सम्मान से अलंकृत प्रियदर्शिनी राहुल, संस्थान के पीआरओ बीके कोमल भाई, मीडिया विंग के राष्ट्रीय संयोजक बीके सुशांत भाई व बीके सरला बहन मुख्य रूप से उपस्थित रहे। पैनल चर्चा का संचालन पत्रकार नारायणी गणेश ने किया। वक्ताओं ने अपने विचारों में रेखांकित किया कि वर्तमान समय में मीडिया पर समाज की अपेक्षाएँ और अधिक बढ़ गई हैं। ऐसे में पत्रकारों को बाहरी घटनाओं के साथ अपनी आंतरिक स्थिति पर भी ध्यान देना चाहिए।

मीडिया प्रतिनिधियों ने अपने अनुभव साझा किए

कार्यक्रम के दौरान मीडिया प्रतिनिधियों ने संवाद, प्रश्नोत्तर और अनुभव साझा किए। सभी वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि सकारात्मक सोच, संयमित भाषा और निष्पक्ष

दृष्टिकोण पत्रकारिता को सशक्त बनाते हैं।

"कर्मयोगा इन एक्शन" कार्यक्रम ने मीडिया पेशेवरों को यह संदेश दिया कि जब कार्य को केवल पेशा न मानकर सेवा और साधना का माध्यम बनाया जाता है, तब वह समाज में स्थायी परिवर्तन की प्रेरणा बनता है। कार्यक्रम का समापन सामूहिक संकल्प के साथ हुआ कि मीडिया जगत में मूल्यों और आत्मिक चेतना को सुदृढ़ किया जाएगा।

ब्रह्मा बाबा की 57वीं पुण्यतिथि 140 देशों में विश्व शांति के रूप में मनाई

देश-विदेश से आए हजारों लोगों ने श्रद्धासुमन अर्पित कर विश्व शांति व एकता के लिए की विशेष साधना

ब्रह्मा बाबा की पुण्यतिथि पर उमड़े हजारों लोग

देश विदेश से आए भाई-बहनों ने किया मेडिटेशन, तीन दिन चली अखंड साधना

शिव आमंत्रण, माउंट आबू, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की 57वीं पुण्यतिथि भारत सहित विश्व के 140 देशों में विश्व शांति दिवस के रूप में मनाई गई। देश-विदेश से पहुंचे 15 हजार से अधिक भाई-बहनों ने ब्रह्ममुहूर्त से योग-साधना के माध्यम से बाबा के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। माउंट आबू स्थित पांडव भवन परिसर में स्थित बाबा के समाधि स्थल शांति स्तंभ पर देश-विदेश से आए हजारों लोगों ने श्रद्धासुमन अर्पित कर विश्व शांति व मानवीय एकता के लिए विशेष साधना की। बाबा के जीवन आदर्शों और शिक्षाओं को जीवन में आत्मसात कर उनके समान तपस्या करने का संकल्प किया। महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी, राजयोगिनी बीके शशि दीदी, राजयोगिनी बीके शीलू दीदी सहित अन्य वरिष्ठ भाई-बहनों ने शांति स्तंभ पर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। वहीं आबू रोड स्थित शांतिवन मुख्यालय के डायमंड हाल में आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ बीके सदस्यों ने बाबा की विशेषताओं, गुणों के बारे में बताया। अलसुबह 3 बजे से ही हर कोई बाबा की याद में रमा नजर आया। पुण्य तिथि को लेकर ब्रह्मा बाबा के समाधिस्थल शांति स्तंभ, बाबा का कमरा, हिस्ट्री हॉल, बाबा की तपस्या स्थली कुटिया, सार्वभौमिक सभागार ओम शान्ति भवन को विशेष रूप से फूलों से सजाया गया।

श्रद्धांजली सभा में संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके शशि प्रभा ने कहा कि ब्रह्मा बाबा का हर कर्म कर्मयोगी जीवन की सीख देता है। लौकिक-अलौकिक, पारिवारिक व सामाजिक व्यवहार में सहज रूप से संतुलन बनाए रखने की कला बाबा के जीवन से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती थी। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी ने कहा कि विश्व शान्ति, मानवीय एकता के पुरोधा ब्रह्मा बाबा की वसुधैव कुटुम्बकम की निस्वार्थ सेवा वृत्ति के परिणामस्वरूप ही आज विश्व के पांचों खंडों में स्वर्णिम संसार की स्थापना में लाखों की संख्या में ब्रह्माकुमार भाई-बहनें, दिन-रात विभिन्न प्रकार की सामाजिक सेवाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सुबह से लेकर रात तक श्रद्धांजली देने का सिलसिला जारी रहा।

शांतिवन में शान से फहराया तिरंगा झंडा

गणतंत्र दिवस समारोह धूमधाम से मनाया, गार्ड ने किया मार्च पास्ट

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन में गणतंत्र दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। महासचिव बीके करुणा भाई ने तिरंगा फहराकर परेड की सलामी ली। शांतिवन के गार्ड ने मार्च पास्ट किया। समारोह में महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि हमने बड़े त्याग, संघर्ष के बाद आजादी पाई थी। आजादी में हमारे साधु-संतों का भी विशेष योगदान रहा। गणतंत्र दिवस हमारा गौरव है। हम सभी भाग्यशाली हैं कि महान भारत भूमि पर जन्म लिया। भारत भूमि महान भूमि, संतों की भूमि, परमात्मा की भूमि है। आजादी में हमारे वीर जवानों का त्याग और बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। देश को आगे बढ़ाने में शासन, प्रशासन, नेता, मंत्री और हमारे माननीय प्रधानमंत्री पूरे उत्साह के साथ देशसेवा में लगे हुए हैं।

शांतिवन के सुरक्षा प्रभाग के प्रमुख कर्नल वीसी सती के नेतृत्व में मार्चपास्ट किया गया। गार्ड ने कदमताल करते हुए वरिष्ठ पदाधिकारियों को सलामी दी। संचालन बीके सुधीर भाई ने किया। इस मौके पर वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके चंद्रिका दीदी, डॉ. सतीश गुप्ता सहित बड़ी संख्या में भाई-बहनें मौजूद रहे।

संपादकीय

बीती बातों को बिसार दें, होलिका में स्वाहा कर दें जीवन के कांटे

भारत त्योहारों की भूमि है, जिसमें होली के त्यौहार का एक विशेष महत्त्व है। होली का त्यौहार हम सभी बड़ी ख़ुशी के साथ मनाते है, होलिका दहन करतें है, एक दूसरे को बड़े प्यार से रंग लगाते हैं। सभी त्यौहार हमारी अपनी जीवन-यात्रा से जुड़े हैं, ये पर्व हमारे ही दिव्य-परिवर्तन की यादगार है! भारत में 33 कोटि देवी-देवताओं का गायन है और सभी त्यौहार किसी न किसी रूप से देवी-देवताओं से संबंधित है। हम यह भी जानते है कि एक समय था जब भारत सोने की चिड़िया हुआ करता था, जिसे हम सतयुग कहते हैं। वे हम देवी-देवतायें अभी सृष्टि चक्र के नियम अनुसार सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग से गुज़रते हुए अपनी दिव्यता से दूर होते गए और देवता से साधारण विकारी मनुष्य बन गए।

पवित्रता, शांति, प्रेम, सुख, समृद्धि जिसके हम अधिकारी हुआ करते थे, 5 विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) में गिरने से दु:खों की दुनिया में आ गए। लेकिन अति के बाद अंत और घोर रात्रि के बाद नया सवेरा सुनिश्चित है। इस घोर कलियुग के बाद सतयुग लाना किसी भी साधारण आत्मा का काम नहीं है और इसलिए ऐसे समय में, कल्प के अंत में निराकार परमात्मा शिव स्वयं इस धरा पर सतयुग की स्थापना के लिए अवतरित होते हैं! परमात्म अवतरण समय से लेकर सतयुग की शुरुआत के समय को संगमयुग कहते है। तो इस वर्तमान संगमयुग के समय पर ही बीती को बिंदी लगाकर, अपने बुराईयों को परमात्मा की याद से दहन कर, फिर से अपनी अपने जीवन को होली अर्थात पवित्र बनाते हैं और सृष्टि पर स्वर्ग निर्माण में अपना योगदान देकर फिर से स्वर्ग के मालिक बनते हैं।

बोध कथा/जीवन की सीख

अति वाचालता का दुष्परिणाम

एक राजा बहुत अधिक बोलता था। उसका मंत्री विद्वान् और शुभ चिंतक था। इसलिए सोचता रहता था कि राजा को कैसे इस दोष से मुक्त करुं और वह ज्ञान दूं जो कि मनुष्य के हृदय में बहुत गहराई से उतरकर उसके स्वभाव का अंग बन जाता है। मंत्री उचित अवसर की तलाश में था कि राजा को अपने इस दोष का आभास हो और उसके द्वारा होने वाली

हानि को समझकर निकल जाए। एक दिन राजा मंत्री के साथ उद्यान में घूमते हुए एक शिला पर बैठ गया। शिला के ऊपर आम के पेड़ पर कौवे का एक घोंसला था। उसमें काली कोयल अपना अण्डा रख गई। कोयल अपना घोंसला नहीं बनाती, वरन कौवे के घोंसले में ही अंडा रख देती है। कौवी उस अंडे को अपना समझकर पालती रहती है। आगे चलकर उसमें से कोयल का बच्चा निकला। कौवी उसे अपना पुत्र समझकर पालती थी। कोयल के बच्चे ने असमय जबकि उसके पर भी नहीं निकले थे, कोयल की आवाज की। कौवी ने सोचा- यह अभी विचित्र आवाज करता है, बड़ा होने पर क्या करेगा?' कौवी ने चोंच से मार-मारकर उसकी हत्या कर दी और घोंसले से नीचे गिरा दिया। राजा जहां बैठा था, वह बच्चा वहीं उसके पैरों के पास गिरा। राजा ने मंत्री से पूछा-मित्र ! यह क्या है? मंत्री को राजा की भूल बताने का यह अवसर मिल गया। मंत्री ने कहा- महाराज! अति वाचाल (बहुत बोलनेवालों) की यही गति होती है। पूछने पर मंत्री ने पूरी बात राजा को समझाकर बताई कि कैसे यह बच्चा असमय आवाज करने से नीचे त और मृत्यु को प्राप्त हुआ। यदि यह चुप रहता तो यथा समय घोंसले से उड़ जाता। इतना कहकर मंत्री ने राजा को मौका देखकर उसकी वाचालता दूर करने के लिए प्रत्यक्ष उदाहरण बताकर नीति बताई। चाहे मनुष्य हो, पशु-पक्षी असमय अधिक बोलने से इसी तरह दु:ख भोगते हैं। उसने वाणी के अन्य दोष और उसके दुष्परिणाम राजा को बताए। दुर्भाषित वाणी हलाहल विष के समान ऐसा नाश करती है, जैसा तेज किया हुआ शस्त्र भी नहीं कर सकता।

संदेश: बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि वाणी की समय, असमय रक्षा करें। अपने समकक्ष व्यक्तियों से कभी अधिक बातचीत न करें। जो बुद्धिमान समय पर विचारपूर्वक थोड़ा बोलता है, वह सबको अपने वश में कर लेता है। बुद्धिमान् और प्रज्ञावान् मंत्री की बात सुनकर राजा अति वाचालता के दोष को दूर कर मितभाषी हो गया और सुखपूर्वक राज्य करने लगा।

मेरी कलम से

मुरुगन कुमार, असिस्टेंट इन्वेस्टिगेटर, पुलिस विभाग, इरोड, तमिलनाडु

राजयोग के अभ्यास से शराब की लत छूटी, जीवन बना स्वर्ग समान

शिव आमंत्रण, आबू रोड। राजयोग ध्यान शुरू करने से पहले मेरी ज़िंदगी उलझनों से भरी थी और मुझे कुछ बुरी आदतें थीं और मैं उनसे छुटकारा पाना चाहता था। मुझे शराब की लत थी। मैं ऐसी हालत में था कि शराब के बिना नहीं रह सकता था। शराब की इस लत की वजह से मेरे परिवार ने मेरे लिए इज्जत खो दी थी। मैं ऐसी हालत में था कि अपने परिवार को ठीक से नहीं संभाल पाता था, मैं अपने बच्चों की अच्छी परवरिश नहीं कर पाता था। मुझे सही जगह पर सही नौकरी नहीं मिल गई लेकिन मेरी इज्जत नहीं होती थी। मैं अपना काम ठीक से नहीं कर पाता था। समाज में भी लोग सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते थे।

मुझे यह ज्ञान एक नोटिस के ज़रिए मिला। मैं 10 साल से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। मुझे यह बहुत पसंद आया और मैं अब एक अच्छी स्थिति में हूं। सबसे पहले, मेरे शरीर में अल्सर था। मुझे बहुत सारी शारीरिक समस्याएं थीं। नसों की समस्या थी। मानसिक उलझन थी। जब मैंने यह राजयोग ध्यान शुरू किया, तो एहसास हुआ कि मेरे अंदर एक आत्मा है। इसी तरह मैं अपनी शारीरिक समस्याओं को कम कर पाया। मैं समाज में काम करने के लिए एक अच्छी जगह ढूंढ़ पाया। मैं अपने लिए एक अच्छा माहौल ढूंढ़ पाया। मैं अपने परिवार के लिए अच्छी चीजें कर पाया।

मुझे एक मज़बूत दिमाग मिला है। शराब से छुटकारा पाने की एकमात्र शक्ति राजयोग ध्यान है। मुझे अपने घर, काम की जगह और समाज में अच्छा सम्मान मिला है। पहले जो लोग तिरस्कार करते थे, अपमान करते थे, आज वही मुझे बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। लोग मेरे जीवन का दूसरों को उदाहरण देते हैं। मेरा जीवन तो मानो यहां पर ही स्वर्ग समान बन गया है। आज परिवार में खुशहाली है, सभी संतुष्ट हैं।

अब मैं ब्रह्ममुहूर्त में उठकर रोज राजयोग ध्यान करता हूं। परमात्मा के महावाक्य मुरली पढ़ता हूं। मेरे जीवन का अनुभव है कि राजयोग मेडिटेशन का नियमित अभ्यास आपके जीवन को नरक से स्वर्ग समान बना देता है। इसमें जब हम आत्म चिंतन करते हैं तो हमें अपने जीवन की गलतियों और भूलों का एहसास होता है। हमें अंतर्मन से अपनी गलतियों की अनुभूति होती है, फिर हम परमात्मा की शक्ति, दिव्य प्रेरणा, ब्रह्माकुमारी बहनों के मार्गदर्शन से जल्द से उन बुरी आदतों से बाहर निकल जाते हैं। ब्रह्माकुमारी बहनों के स्नेह, आध्यात्मिक मागदर्शन से मैं बहुत जल्द नशे के चंगुल से दूर हो गया।

आध्यात्मिक जगत में आत्मिक अनुसंधान द्वारा नैसर्गिक अभिप्रेरणा

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 92

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशतनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबू रोड। चेतना की चैतन्यता का व्यापक परिदृश्य मानव जीवन में व्यावहारिक अनुभूति हेतु अनादि काल से सृष्टि पर आगमन की प्रक्रिया से गतिशील रहता है जिसमें आध्यात्मिक पुरुषार्थ को आत्मसात करके स्वाध्याय द्वारा सत्यता के स्वरूप को स्वीकारने की स्थितियाँ निरन्तर किये जाने वाले सत्संग के सानिध्य में पूर्व जन्मों के पुण्य - प्रतिफल से सम्पूर्ण विवेक की जागृति द्वारा सुनिश्चित हो पाती है। आत्मानुभूति प्राप्त करने के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व में अति सूक्ष्म तत्व अर्थात् जिज्ञासु प्रवृत्ति की आन्तरिक उत्कंठा की उपस्थिति से स्वाध्याय के प्रति निष्ठावान बनना सहज हो जाता है जिससे आत्मज्ञान का सत्य स्वरूप प्रकट होता है जो अन्ततः आचरण के रूपान्तरित संस्करण में परिवर्तित हो जाता है। मानव जीवन में आत्मानुभूति की प्राप्ति होने के पश्चात नैसर्गिक रूप से स्वाध्याय की ओर ध्यान आकर्षित होता है तथा आत्मगत चेतना आत्मिक तत्व के साथ परमात्म सत्ता की अनुभूति हेतु सदा से ही पुरुषार्थी स्वरूप में स्वयं को नियम-संयम, जप-तप, ध्यान-धारणा एवं स्वाध्याय-सत्य के मार्ग पर गतिशील बनाये रखती है।

ज्ञानामृत ग्राहयता की अदम्य इच्छाशक्तिः
जीवन में अच्छाई और सच्चाई के प्रति अर्न्तमन द्वारा जुड़ाव की अनुभूति का दीर्घकालीन परिवेश चेतना का सबल पक्ष होता है जो परिपक्व मनःस्थिति को निर्मित करने में मददगार रहता है जिससे व्यक्तित्व के वृहद् स्वरूप की अदम्य इच्छा शक्ति सदैव ज्ञानामृत की ग्राहयता का आधार बन जाती है। मानव जीवन की नैसर्गिक स्थितियाँ व्यक्ति को श्रेष्ठतम स्वरूप की ओर गतिशील होने के लिए निरंतर अभिप्रेरित करती रहती है जिससे अन्तः करण शक्तिशाली बनकर उच्चतम स्थान पर निजता को स्थापित करने के लिए पुरुषार्थ की तीव्रता के साथ सदा ज्ञान रूपी अमृत को ग्रहण करने में श्रद्धा एवं आस्था बनाये रखता है। स्वयं को महानता की दिशा में गतिशील करने हेतु आन्तरिक मनोभाव के सानिध्य में वैचारिक परिपक्वता और पवित्रता की पृष्ठभूमि पूर्णतः अनिवार्य होती है जो आत्मिक गुणों एवं शक्तियों की महत्वपूर्ण आधारभूमि से सम्पूर्ण व्यवहारगत संतुलन को सदा मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रदान करती रहती है।

जीवन में अंतर्मन से सुमति के प्रति निष्ठावान होने के कारण व्यक्तिगत मनोवृत्ति स्वयं को अच्छा बनाने की दिशा में अग्रसर हो जाती है जो बेहतर स्थिति से होते हुए उत्तम स्वरूप तक पहुँचकर श्रेष्ठतम बन जाने के लिए प्रयासरत बने रहते हैं जिससे अन्तःकरण की अभिलाषा व्यक्ति को इसी जन्म में महानता की उच्चता पर स्थापित कर देती है। आत्मगत स्वभाव विभिन्न स्थितियों के अन्तर्गत जिज्ञासु प्रवृत्ति की आन्तरिक उत्कण्ठा से निरन्तर स्वाध्याय में संलग्न रहकर स्वयं को ऊँचाई की ओर गतिशील करने और सदा आगे बढ़ने की श्रेष्ठता से भरपूर होता है जिसका पवित्र परिणाम अन्ततः धर्मगत आचरण के अनुकरण से ज्ञानामृत्त ग्राहयता की अदम्य इच्छाशक्ति का सदुपयोग करके अध्यात्म का सम्पूर्ण जीवन काल में अनुसरण होता है। आध्यात्मिक जगत में किये जाने वाले आत्मिक अनुसंधान के विशुद्ध आयाम जब प्रतिपादित होते हैं तब नैसर्गिक अभिप्रेरणा में जिज्ञासु प्रवृत्ति की अभिवृद्धि हो जाती है और चेतना का सुदृढ़ पक्ष पवित्रतम अभिलाषा के संदर्भ एवं प्रसंग में आन्तरिक उत्कण्ठा से समृद्धशाली बनकर पुरुषार्थ में सदा गतिशील बना रहता है।

आत्मिक अनुसंधान से नैसर्गिक अभिप्रेरणा

सृष्टि में जीव जगत की दृष्टि और दृष्टिकोण के आधार से व्यक्तिगत जिज्ञासु प्रवृत्ति का आंकलन होता है जो आन्तरिक उत्कण्ठा के कारण ही स्वाध्याय की ओर अभिमुखित रहकर सत्य की खोज में जुटा रहता है जिसमें अत्यन्त ही रहस्यमयी स्थितियाँ समाहित होती है और उसका व्यापक स्वरूप अनुसंधान अध्ययन के विशुद्ध आयाम के द्वारा ही प्रतिपादित हो पाता है । आत्मगत चेतना का नैसर्गिक पक्ष सदा अनुसंधान अध्ययन की पक्षधरता से सम्बद्ध रहता है क्योंकि स्वयं को परिमार्जन की स्थितियों में स्थापित किया जाना और परिष्कृत अवस्था के निर्माण हेतु सतत् रूप से पुरुषार्थ की गतिशीलता में संलग्नता ही शोधपूर्ण विवेक से विशुद्ध समाधान के उच्चतम स्वरूप में निर्मित हो जाने की परिणिति होती है। जीवन में सफलता की प्राप्ति हेतु कर्मजगत की गतिविधि में परिश्रम का समावेश निश्चित रूप से होता है जो उपलब्धि के प्रति व्यक्तिगत चिंतनशीलता को आरम्भ करके गौरवपूर्ण उपलब्धि से स्वयं को सुसज्जित करने के लिए अनुसंधान अध्ययन की गहनतम प्रक्रिया को आत्मसात करके कल्याणकारी परिणाम की ओर चेतना को अभिमुखित कर देता है।

इक ओंकार, सबका पिता एक है इसलिए सभी लोगों को एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए।

गुरुनानक देव जी, सिख धर्म

जीवन में हजारों लड़ाइयां जीतने से अच्छा है कि तुम स्वयं पर विजय प्राप्त कर लो

गौतम बुद्ध, बौद्ध धर्म

शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है : राजयोगिनी जयंती दीदी

शिव आमंत्रण, मदुरै, तमिलनाडु।

ब्रह्माकुमारीज़ मदुरै सबज़ोन की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर तामुक्कम कन्वेंशन सेंटर में स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयन्ती दीदी ने कहा कि ध्यान द्वारा किया गया आत्म-परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का सशक्त आधार बनता है। विनम्रता प्रत्येक मनुष्य का मूल गुण होना चाहिए। जब विचार शुद्ध होते हैं, तो समय का सदुपयोग स्वतः होने लगता है। मन की शक्ति अत्यंत विशाल है, जो आत्मविश्वास को बढ़ाती है और जीवन की चुनौतियों का सामना सहज बना देती है। शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण हम सभी की सामूहिक ज़िम्मेदारी है।

उन्होंने कहा कि परमात्मा इस धरती पर उस स्वर्णिम संसार की स्थापना के लिए अवतरित हुए हैं, जिसकी कामना हर आत्मा करती है। उस संसार का अधिकारी बनने के लिए आंतरिक सकारात्मक परिवर्तन अनिवार्य है, जिसमें राजयोग ध्यान अत्यंत सहायक सिद्ध होता है। तमिलनाडु सरकार के वाणिज्य कर एवं पंजीयन मंत्री पी. मूर्ति ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए सरल और व्यावहारिक विधियां प्रदान करती है। मदुरै अनेक गौरवपूर्ण विशेषताओं से युक्त है और ब्रह्माकुमारीज़ के 50 वर्षों की निःस्वार्थ सेवा ने नगर की गरिमा को और बढ़ाया है। उन्होंने संस्था की निरंतर प्रगति एवं समाज के हर वर्ग तक आध्यात्मिक लाभ पहुँचने की शुभकामनाएँ दीं। मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति जीआर स्वामीनाथन ने कहा कि प्रेम की महान शक्ति सभी को जोड़ने वाला सेतु है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का विश्व-कल्याण के संकल्प के साथ सेवा करना अत्यंत गर्व की बात है। संस्थान के अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, श्रीमद तिरुग्नान सम्बन्ध तम्बिरान स्वामीगल (धरुमपुरम अधीनम, त्रिची), तमिलनाडु ज़ोन की निदेशिका बीके बीना दीदी, उप निदेशिका बीके उमा दीदी, उप महापौर टी. नागराजन, दिल्ली से आईं ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, मैसूर की निदेशिका बीके लक्ष्मी दीदी, पूर्व सीबीआई निदेशक डीआर कार्तिकेयन, इंजीनियरिंग प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक बीके मोहन सिंघल सहित अनेक विशिष्ट अतिथियों ने सहभागिता की।

नई दिल्ली: सेमीनार में न्यायविदों ने सीखी राजयोग ध्यान की विधि

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ के करोल बाग स्थित पांडव भवन सेवाकेंद्र द्वारा ज़ूरिस्ट विंग के तहत सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें न्यायमूर्ति सुधीर कुमार जैन (पूर्व न्यायाधीश, दिल्ली उच्च न्यायालय), राजयोगिनी बीके आशा दीदी (निदेशिका, ओम शांति रिट्रीट सेंटर, गुरुग्राम), राजयोगिनी बीके पुष्पा दीदी (चेयरपर्सन, ज़ूरिस्ट विंग), चंद भूषण (सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता), सीए सिद्धेश्वर भल्ला (पूर्व अध्यक्ष, द इंस्टिट्यूट ऑफ इंटरनल ऑडिटर्स, इंडिया), किमी सिंगला (सिविल जज), न्यायमूर्ति दीपक गर्ग (जिला एवं सत्र न्यायाधीश), सीए हितेंद्र मेहता (मैनेजिंग पार्टनर, सेंट्रम लीगल, बोर्ड सदस्य, ईपीएफओ), यश मलिक (पूर्व कार्यकारी निदेशक, ओएनजीसी), प्रज्ञा बघेल (मानद सचिव, सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन), डॉ. गीता (अध्यक्ष, ऑल इंडिया वूमेन लॉयर्स एसोसिएशन), बबीता संत (कोषाध्यक्ष, एआईडब्ल्यूएलए),अधिवक्ता

नैना जैन, रेनू (वरिष्ठ अधिवक्ता), नीलम नरंग (पूर्व अतिरिक्त लोक अभियोजक), रमेश सेठी (वरिष्ठ अधिवक्ता), बीके विजय बहन, बीके ईशू, बीके मनीष, बीके मुकेश आहूजा मुख्य रूप से मौजूद रहे।

जो सनातन है, सत्य है, चैतन्य है, उसे समझने का प्रयास करें: बीके हरीश भाई

शिव आमंत्रण, सिंगरौली, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के विंध्यनगर तपोवन कॉम्पलेक्स द्वारा रेनू सागर हिंडालको, रिलायंस प्लांट, रिलायंस माइंस आदि में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। तपोवन कॉम्पलेक्स में आयोजित शुभारंभ कार्यक्रम में संस्था के अंतराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू से पधारे प्रशासक प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके हरीश भाई ने सक्सेस विदाउट स्ट्रेस विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे भारत की संस्कृति आदिकाल से सर्वे भवंतु सुखिनः की रही है। जब भी कोई यहां आया तो भारतवासियों ने उसे भी गले लगाया है। आज हम सिमटते जा रहे हैं। अब पुनः वह सूत्र जोड़ने की जरूरत है जहां वसुधैव कुटुंबकम का नारा था, हर एक में मानवता थी। यह मानवता केवल आध्यात्म ही सिखाता है। अतः अब हम अपने दीपक बनें, हम प्रज्वलित हों।

उन्होंने कहा कि अगर हम चाहते हैं कि ज़िंदगी से विभाजन खत्म हो जाए, एकता का संचार हो तो इसके लिए खुद को जानना, खुद को जगाना और खुद को महसूस करना होगा। जो सनातन है, सत्य है, चैतन्य है, हम उसको समझने का

प्रयास करें तब परस्पर विश्वास की लौ जगती है कि हम सब उस एक जगत नियंता की संतान एक सूत्र से जुड़े हुए भाई-भाई हैं। दिल्ली से पधारी विधात्री दीदी ने कहा कि वर्तमान समय के तमोप्रधान वातावरण में मन को सशक्त बनाकर ही वास्तविक हीलिंग संभव है।

माउंट आबू से पधारी मंजू दीदी ने राजयोग ध्यान को आंतरिक प्यूरीफायर बताते हुए इसे सीखने का आग्रह किया। रिलायंस प्लांट के वाइस प्रेसिडेंट आशीष पांडे ने अतिथियों का स्वागत किया। बीके अभिलाषा दीदी ने राजयोग से सभी को गहन शांति की अनुभूति कराई। तपोवन कॉम्पलेक्स की संचालिका बीके शोभा दीदी ने आभार जताया। इस मौके पर सीधी से बीके रेखा दीदी, बीके सुनीता दीदी व अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, कोटा, राजस्थान। श्रीबागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के नगर आगमन पर ब्रह्माकुमारी आरती दीदी ने स्नेह मुलाकात कर उन्हें परमपिता शिव परमात्मा का स्मृति चिंह प्रदान कर सम्मानित किया। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं के बारे में बताया।

शिव आमंत्रण, रतलाम, मप्र। उज्जैन के निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर श्रीश्री 1008 श्री शांति स्वरूपानंद महाराज के नगर आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ पत्रकार कॉलोनी सेवाकेंद्र से ब्रह्माकुमारी सविता दीदी, ब्रह्माकुमारी सावित्री दीदी, ब्रह्माकुमारी रजनी दीदी ने मुलाकात कर परमात्मा शिव का स्मृति चिंह भेंट किया।

शिव आमंत्रण,बिलासपुर, छग। बिलासपुर व्यापार एवं उद्योग मेला आयोजन समिति 2026 के तत्वावधान में आयोजित समारोह में समाजसेवा एवं नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए ब्रह्माकुमारी रूपा दीदी को सावित्रीबाई फुले नारी शक्ति सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान संस्था द्वारा किए जा रहे निरंतर सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक सेवा कार्यों के लिए प्रदान किया गया। समारोह में

शिव आमंत्रण, खजुराहो, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ग्राम चंद्रनगर के घने जंगल के बीच में बसे शिव भोलेनाथ जी स्वर्गेश्वर धाम में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जहां पर बसंत पंचमी पर लाखों श्रद्धालुओं ने भोलेनाथ के दर्शन किए। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके विद्या दीदी एवं छतरपुर से आई बीके कमला दीदी ने सभी को प्रदर्शनी के बारे में बताया।

शिव आमंत्रण, दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ मजलिस पार्क द्वारा आत्म सशक्तिकरण के लिए दृढ़ता विषय पर इंद्रा नगर ग्राउंड में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें माउंट आबू से पधारे राजयोग प्रशिक्षक व मेडिटेशन एक्सपर्ट बीके सूरज भाईजी ने जीवन में सुख शांति लाने और आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए टिप्स दिए। साथ ही जीवन में परमात्मा से शक्ति लेकर राजयोग का उपयोग करने की सरल विधि बताई। इस मौके पर बीके गीता दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके राजकुमारी दीदी, बीके शारदा दीदी ने सम्मान किया।

दादी जानकीः छटवां पुण्य स्मरणः

दादी की तपस्या का तप है कि योग के प्रकम्पन्नों को आज भी शक्ति स्तंभ पर महसूस कर सकते हैं

दादी जानकी के जीवन के तीन मंत्र- सच्चाई, सफाई और सादगी

भगवान कहते हैं- मेरे बच्चों तुम कोई भी फिक्र मत करो, सिर्फ मुझे याद करो, मैं तुहारे सारे कार्य आसान कर दूंगा। खुशी सबसे बड़ा गहना है, सदा खुशी में नाचते रहो। खुशी जीवन का श्रृंगार है।

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

विश्वभर को सच्चाई, सफाई और सादगी का संदेश देने वालीं योग शक्ति राजयोगिनी दादी जानकी जी की तपस्या का ही कमाल है कि उनके योग के प्रकम्पन्नों को आज भी महसूस किया जाता है। दादी की याद में बने शक्ति स्तंभ पर पहुंचते ही मन योग में रम जाता है। दादी की कथनी और करनी एक समान थी। यही कारण है कि उन्होंने ताउम्र अपने जीवन के मूलमंत्र- सच्चाई, सफाई और सादगी को प्रत्येक पल जीया। हृदय इतना विशाल की 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनों की मार्गदर्शिका और पांच हजार से अधिक सेवाकेंद्रों की निदेशिका होने के बाद भी कहती थीं कि मेरा जेब खाली और मैं विश्व का मालिक। दादीजी 27 मार्च 2020 को 104 वर्ष की उम्र में स्थूल देह का त्याग कर अव्यक्त वतन वासी हो गईं थीं, छठे पुण्य स्मरण पर विशेष...

बचपन से ही थे भक्तिभाव के संस्कार

अविभाज्य भारत के हैदराबाद सिंध प्रांत में वर्ष 1916 में जन्मी दादी जानकी ने मात्र चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई की थी। भक्ति भाव के संस्कार बचपन से ही मां-बाप से विरासत में मिले। उन्होंने लोगों को दुःख, दर्द, तकलीफ, जातिवाद और धर्म के बंधन में बंधे देख अल्पायु में ही समाज परिवर्तन का दृढ़ संकल्प किया। माता-पिता की सहमति से 21 वर्ष की आयु में आप ओम् मंडली (ब्रह्माकुमारी•ा का पहले यही नाम था) से जुड़ गईं। ब्रह्मा बाबा के सान्निध्य में 14 वर्ष तक गुप्त तपस्या की।

37 देशों में किया आध्यात्म का शंखनाद

दादी पहली बार 60 साल की आयु में वर्ष 1970 में विदेशी जमीं पर मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिकता का बीज रोपने के लिए निकलीं। सबसे पहले लंदन से आध्यात्म का बीजारोपण किया। यहां 1991 में कई एकड़ क्षेत्र में फैले ग्लोबल को-ऑपरेशन हाऊस की स्थापना की। कारवां बढ़ता गया और यूरोप के देशों में आध्यात्म का शंखनाद हुआ। दादी ने अकेले ही 100 से अधिक देशों में आध्यात्म का संदेश पहुंचाया। उन्होंने वर्ष 1970 से 2007 तक 37 वर्ष विदेश में अपनी सेवाएं दीं। वर्ष 2007 में संस्था की तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के अव्यक्त होने के बाद 27 अगस्त 2007 को ब्रह्माकुमारी•ा की मुख्य प्रशासिका बनकर अंतिम सांस तक ईश्वरीय सेवा की।

प्रधानमंत्री ने बनाया था स्वच्छता का ब्रांड एंबेसेडर

देश में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दादी जानकी को स्वच्छ भारत मिशन का ब्रांड एंबेसेडर भी नियुक्त किया था। दादी के नेतृत्व में पूरे भारतवर्ष में विशेष स्वच्छता अभियान भी चलाए गए। इसके अलावा दादी को देश-विदेश में मानव मात्र की सेवाओं के लिए कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अवार्ड से भी नवाजा गया। मूल्यनिष्ठ शिक्षा एवं आध्यात्मिकता में विश्वभर में सराहनीय योगदान देने पर दादीजी को वर्ष 2012 में गीतम विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम ने डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया। आध्यात्मिक एवं धार्मिक लोगों के एक संगठन कीपर्स ऑफ विजडम की दादी जी सदस्य भी थीं। विश्व स्तर पर मानव आवास एवं पर्यावरण की समस्याओं के समाधान के लिए यह संगठन कार्य करता है। दादी के समान में वर्ष 1977 में लंदन में जानकी फाउंडेशन फॉर ग्लोबल हेल्थकेयर की स्थापना की गई।

विश्व की सबसे स्थिर मन की महिला का खिताब मिला था

दादी जानकी दुनिया की पहली ऐसी महिला थीं, जिन्हें सबसे स्थिर मन की महिला का खिताब मिला था। अमेरिका के टेक्सास मेडिकल एवं साइंस इंस्टीट्यूट में वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षण के बाद दादीजी को मोस्ट स्टेबल माइंड ऑफ द वर्ल्ड वुमन से नवाजा था। उन्होंने योग से अपने को मन इतना संयमित, पवित्र, शुद्ध और सकारात्मक बना लिया था कि वह जिस समय चाहें, जिस विचार या संकल्प पर और जितनी देर चाहें, स्थिर रह सकती थीं।

दादीजी ने पहले ही कर ली थी जाने की तैयारी

दादीजी के साथ लंदन में रहीं और 35 साल तक निज सचिव के रूप में सेवाएं देने वालीं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके हंसा ने बताया कि दादीजी ने पहले से ही अपने शरीर छोडने की प्लानिंग कर ली थी। कई बार इसका जिक्र करती थीं कि वे चाहती हैं कि उनके शरीर छोडने के समय न तो कोई मेडिकल मशीनरी लगी हो और न ही किसी हास्पिटल में रहें। दादी जब 27 मार्च को इस दुनिया से विदा हुईं तो बिल्कुल वही स्थिति थी। दादी की इच्छा थी कि जब वे शरीर छोड़े तो ज्यादा तामझाम या ज्यादा खर्च या लोग इक्कट्ठे ना हों। यह बात वह कई बार सार्वजनिक रूप में भी करती थीं। वैसे, उनकी तबियत 17 मार्च को ही अहमदाबाद में ज्यादा खराब हो गई। वहां से चिकित्सक छुट्टी नहीं दे रहे थे कि वे माउंट आबू लेकर आएं, लेकिन दादी का भाव और विचार था कि जल्दी माउंट आबू ले चलो। 18 मार्च को हम आबू आ गए। यहां एक बारगी लगा कि दादी ठीक हो जाएंगी। उनके सपोर्टिंग सिस्टम को हटा दिया गया। केवल कभी-कभी ऑक्सीजन दी जाती थी। ऐसे में लगने लगा कि दादी अब पूरी तरह ठीक हो जाएंगी। शरीर छोडने के पहले मुझसे हाथ मिलाया और भाकी पहनी। यह करीब रात 10 बजे की घटना है। इसके कुछ देर बाद दादी की तबीयत खराब होने लगी। चिकित्सकों को बुलाया गया, लेकिन 27 मार्च सुबह 2 बजे वे इस दुनिया से विदा हो गईं।

14 वर्ष तक गुप्त साधना...

ब्रह्मा बाबा के सान्निध्य में आपने 14 वर्ष तक गुप्त तपस्या की। इन 14 वर्षों तक कराची में एक साथ 300 भाई-बहनों ने प्रेम और स्नेह से रहते हुए खुद को इस विश्व विद्यालय के चार सब्जेक्ट (ज्ञान, योग, सेवा और धारणा) में परिपक्व बनाया। ब्रह्ममुहूर्त में सुबह 4 बजे से उठना और घंटों तक योग-साधना और सत्संग ये दिनचर्या रही। वर्ष 1950 में संस्था माउंट आबू स्थानांतरित हुई। जहां से विश्व सेवाओं का शंखनाद हुआ।

दादी जी के जीवन की 10 अनमोल शिक्षाएं

01 प्रभु से इतना प्यार है कि उसे अपने दिल में बैठा रखा है। उसे हरदम अपने दिल-जिगर के पास महसूस करती हूं। जब आंख खोलती हूं तो बाबा की दृष्टि पड़ती, उन्हें अपनी आंखों से निहारती हूं। परमात्मा से अन्नय प्रेम ही जीवन का सार है।

02 मेरे दो बच्चे हैं- सुख और शांति। मेरा पति दिलवाला (परमपिता शिव परमात्मा) है। अब मेरा तीसरा बच्चा है प्रेम। जीवन का आधार सुख-शांति और प्रेम है।

03 मेरा सफेद कपड़ा, जेब खाली और सारे विश्व की मालिक हूं। मैंने कभी जीवन में अपने साथ पर्स नहीं रखा। कभी भी एक रुपए की फिक्र नहीं रही। करनकरावनहार परमात्मा शिव बाबा सब करा लेता है। जब सबकुछ उसे अर्पण कर देते हैं तो फिर सारी जिमेवारी प्रभु पिता की हो जाती है।

04 जीवन में सच्चाई है तो खुशी मिलेगी, खुशी से प्रेम और प्रेम से नम्रता-मधुरता।

05 जीवन में सदा ओके रहना, चाहे लाख परेशानियां आएं, अपने मन की स्थिति कभी बिगडने नहीं देना।

06 सारे संसार में कोई बात मुश्किल नहीं है। परमात्मा पिता पर विश्वास हो तो सब आसान है। ब्रह्माकुमारी बहनें जो संकल्प करती हैं वह पूरा हो जाता है क्योंकि सब कार्य परमात्मा शिव बाबा कराते हैं। करनकरावनहार तो बाबा है।

07 भगवान कहते हैं- मेरे बच्चों तुम कोई भी फिक्र मत करो, सिर्फ मुझे याद करो, मैं तुहारे सारे कार्य आसान कर दूंगा। खुशी सबसे बड़ा गहना है, सदा खुशी में नाचते रहो।

08 दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण है। जब हम मिलकर कोई कर्म करते हैं तो वह आसान हो जाता है और सफल होता है।

09 जीवन में सच्चाई से चलेंगे तो सुख मिलेगा। त्याग-तपस्यामूर्त बनेंगे तो ही आत्मा का विकास होगा। धीरज रखो, शांति से रहो।

10 पांच बातें हर एक के दिल में छपी हों- पवित्रता, सत्यता, धैर्यता, नम्रता, मधुरता।

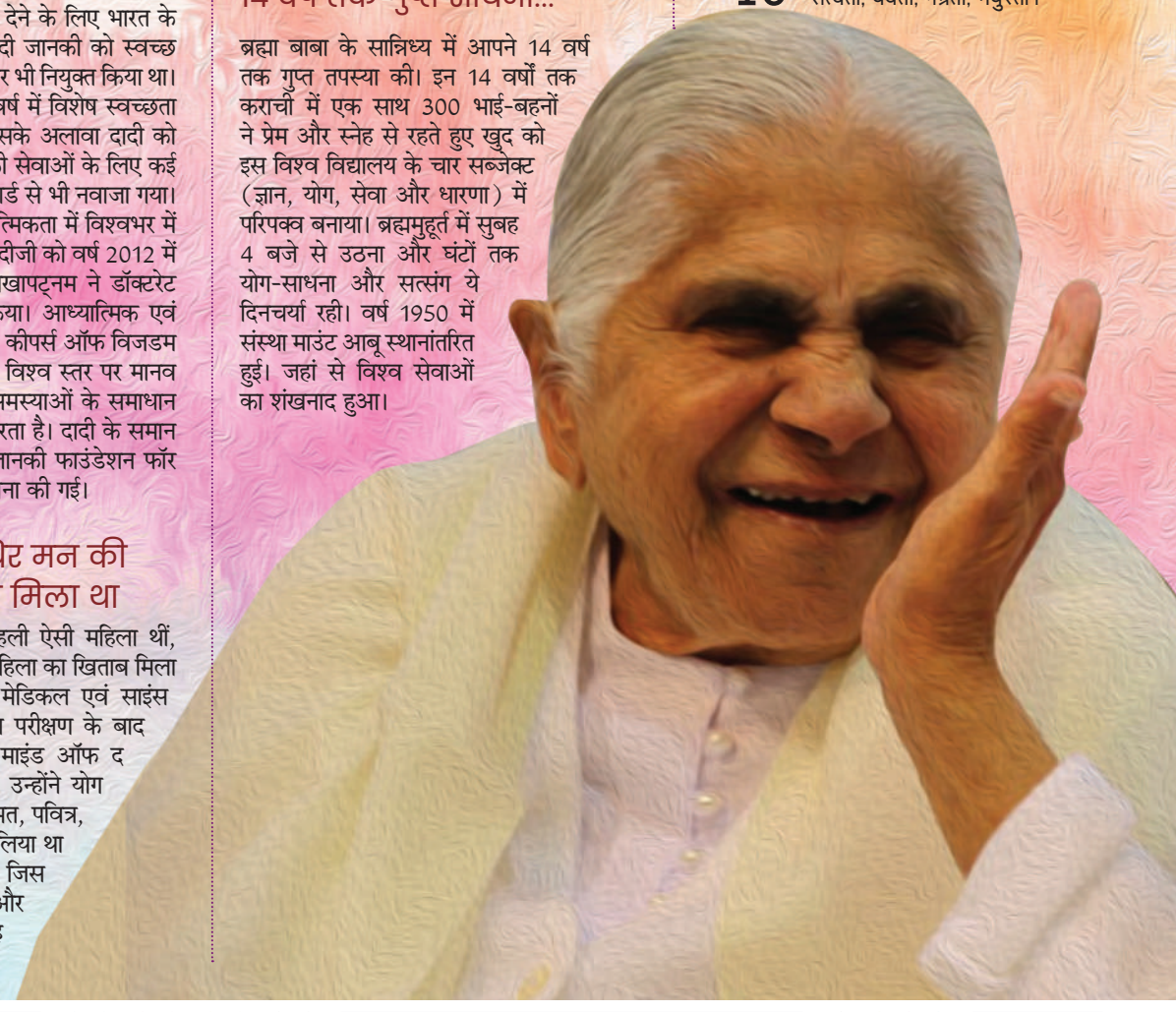

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनीः पांचवी पुण्य तिथि पर विशेष

11 मार्च 2021 को महाप्रयाण कर अव्यक्त वतनवासी हो गईं थीं दादी

जिनका जीवन दिव्य गुणों के गुलदस्ते की तरह था 'गुलजार'

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

जिनकी आंखों में परमात्म प्यार की चमक, चेहरे पर दिव्य मुस्कान, रुहानियत से लबरेज व्यक्तित्व, सादगी की मूरत और दिव्य गुणों रूपी गुलदस्ते की तरह जिनका जीवन गुलजार था। ऐसी दिव्य आभा और दिव्य दृष्टि के वरदान से संपन्न थीं राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी)। 11 मार्च 2021 को इस दैहिक लोक से महाप्रयाण कर अव्यक्तवासी हो गईं थीं। 92 वर्ष की आयु में आपको वर्ष 2020 में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया था। दादीजी की स्मृति और उनकी शिक्षाओं को याद दिलाने और उन्हें संजोकर रखने के लिए शांतिवन परिसर में स्मृति स्तंभ दिव्य लोक का निर्माण कार्य जारी है। गुलजार दादी के पांचवे पुण्य स्मरण पर उनके जीवन से जुड़े अनछुए पहलू, प्रेरणाएं और शिक्षाओं को लेकर विशेष....

बचपन में ध्यान में होती थीं दिव्य अनुभूतियां-

दादी हृदयमोहिनी ने मात्र चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई की थी। लेकिन तीक्ष्ण बुद्धि होने से आप जब भी ध्यान में बैठतीं तो शुरुआत के समय से ही दिव्य अनुभूतियां होने लगीं। यहां तक कि आपको कई बार ध्यान के दौरान दिव्य आत्माओं के साक्षात्कार हुए, जिनका जिक्र उन्होंने ध्यान के बाद ब्रह्मा बाबा और अपनी साथी बहनों से भी किया। दादी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनका गंभीर व्यक्तित्व। बचपन में जहां अन्य बच्चे स्कूल में शरारतें करते और खेल-कूद में दिलचस्पी के साथ भाग लेते थे, वहीं आप गहन चिंतन की मुद्रा में रहतीं थीं।

संपर्क में आने वालों को होती थी दिव्यता की महसूसताः जब आप मात्र 9 वर्ष की थीं तब से आपको दिव्य लोक की अनुभूति होने लगी। इसके बाद से वह जीवन की अंतिम यात्रा तक ज्यादातर समय ध्यान मग्न ही रहती थीं। दादी का पूरा जीवन सादगी, सरलता और सौयता की मिसाल रहा। बचपन से ही विशेष योग-साधना के चलते दादी का व्यक्तित्व इतना दिव्य हो गया था कि उनके संपर्क में आने वाले लोगों को उनकी तपस्या और साधना की अनुभूति होती थी। उनके चेहरे पर तेज का आभामंडल उनकी तपस्या की कहानी साफ बयां करता था। एक साक्षात्कार के दौरान दादी ने बताया था कि जब वह 9 वर्ष की थीं और अपने मामा के यहां गईं थीं, तभी उनके घर ब्रह्मा बाबा का आना हुआ। यहां बाबा से उन्हें दिव्य साक्षात्कार हुआ था। बाबा हम बच्चों का इतना याल रखते थे कि खुद अपने हाथ से दूध में काजू-बादाम डालकर खिलाते थे। बाबा का प्यार, स्नेह इतना मिला कि कभी भी लौकिक मां-बाप की याद नहीं आई।

1969 से 2016 तक कराया परमात्म मिलन-

18 जनवरी 1969 में संस्थापक ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद परमात्म आदेशानुसार दादी ने परमात्म संदेशवाहक और दूत बनकर लोगों के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और दिव्य प्रेरणा देने की भूमिका निभाई। दादीजी ने 2016 तक परमात्मा का दिव्य संदेश देकर लाखों भाई-बहनों को योग-तपस्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। एक बार चर्चा के दौरान दादीजी ने बताया था कि जब में मन की शक्ति से वतन में जाती हूं तो आत्मा तो शरीर में रहती है लेकिन मुझे इस शरीर का भान नहीं रहता है। दादीजी अपने प्रवचनों में हमेशा कहती थीं कि परेशान होने के पांच शब्द हैं- पहला है क्यों, क्यों कहा और व्यर्थ संकल्पों की क्यूं चालू हो जाती है। इसने ये कहा, उसने ये कहा और मन में व्यर्थ संकल्प चालू हो जाते हैं। क्योंकि जो बीत चुका वह हमारे हाथ में नहीं है। क्यूचर ही हमारे हाथ में है। क्यों, क्या, कौन, कब और कैसे...ये पांच शब्द हमें परेशान करते हैं। खुशी के जाने के यह पांच शब्द ही हैं।

8 साल की उम्र में संस्था से जुड़ी-

दादी के बचपन का नाम शोभा था। आपका जन्म वर्ष 1928 में करांची में हुआ था। आप जब 8 वर्ष की थी तब संस्था के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा द्वारा खोले गए ओम निवास बोर्डिंग स्कूल में दाखिला लिया। यहां आपने चौथी कक्षा तक पढ़ाई की। स्कूल में बाबा और ममा (संस्थान की प्रथम मुय प्रशासिका) के स्नेह, प्यार और दुलार से प्रभावित होकर अपना जीवन उनके समान बनाने की निश्चय किया। आपकी लौकिक मां भक्ति भाव से परिपूर्ण थीं।

मन हो जाता शक्तिशाली

दादी का इलाज करने वाले डॉक्टर कहते थे कि जैसे ही दादीजी के रूम में जाते थे तो मन को शक्तिशाली फीलिंग होती थी। बीमारी के बाद भी दादीजी के चेहरे पर कभी दर्द, दुख या उदासी की फीलिंग नहीं देखी। दादीजी के साथ के अनुभव को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। उन दिव्य अनुभूतियों को सिर्फ अनुभव ही किया जा सकता है। हमारे जीवन का दादीजी एकमात्र ऐसी मरीज थीं जिन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मुझे यह तकलीफ है।

दादी जी के जीवन की 10 अनमोल शिक्षाएं

01 जो भगवान से संबंध जोड़ते हैं वह भाग्यवान बन जाते हैं। परमात्मा का साथ जीवन की ज्योति जगा देता है, जिससे दु:खों का अंधकार समाप्त हो जाता है। भगवान का बच्चा होने का अर्थ है, उनकी विशेषताओं को स्वयं में प्रत्यक्ष करना।

02 जब आपको गर्मी होती है तो पंखे से हवा मांगते नहीं हैं, आप उसके सामने बैठ जाते हैं और हवा अपने आप आपको मिल जाती है, उसी प्रकार परमात्मा के सामने बैठ उसे हम दिल से याद करें तो परमात्मा की सारी शक्तियां आपको स्वतः मिल जाएंगी, आपको मांगने की जरूरत नहीं।

03 समर्थन और विरोध केवल विचारों का होना चाहिए, किसी व्यक्ति का नहीं। क्योंकि अच्छा व्यक्ति भी गलत विचार रख सकता है और किसी बुरे व्यक्ति का भी विचार सही हो सकता है।

04 किसी चीज को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है, किन्तु उसे महसूस करने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती हैं। जीवन में प्रसन्न व्यक्ति वह है जो स्वयं का मूल्यांकन करता है, जो दूसरों का मूल्यांकन करता है वह दु:खी रहता है।

05 चित्र बनाना जितना आसान है चरित्र बनाना उतना ही मुश्किल। जब कोई गुण दिखाई दे तो अपने मन को कैमरा बना लीजिए और कहीं अवगुण दिखाई दें तो अपने मन को आइना बना लीजिए।

06 मन की बीमारी से बचना चाहते हैं इसके लिए गीता में ईश्वर के महावाक्य हैं कि मन को मेरी याद में लगा दो अर्थात् 'मनमनाभव' हो जाओ। जो अपने मन से शुभ भावनाओं का दान करते रहते हैं, वह हर प्रकार की मानसिक बीमारी से सदा मुक्त रहते हैं।

07 किसी के साथ रिश्ता बनाना हो तो उसके लिए समय निकालना पड़ता है उससे प्यार करना पड़ता है तब जाकर रिश्ता बनता है। फिर हमने कैसे सोच लिया कि मंदिर गए, घंटी बजाई, प्रसाद लिया और चलो... भगवान से रिश्ता बन गया, नहीं उससे रिश्ता बनाना है तो उस परमात्मा के लिए समय निकालना पड़ेगा, उसे याद करना पड़ेगा, उससे प्यार करना पड़ेगा, तब जाकरभगवान के साथ रिश्ता बनेगा।

08 नम्र बनो तो लोग नमन करते हुए सहयोग देंगे। दो ही चीजें ऐसी हैं, जिसमें किसी का कुछ नहीं जाता- मुस्कुराहट व दुआ। हमेशा बांटते रहें, जो व्यक्ति किसी दूसरे के चेहरे पर हंसी और जीवन में ख़ुशी लाने की क्षमता रखता है, ईश्वर उसके चेहरे से कभी हंसी और जीवन से खुशी कम नहीं होने देता।

09 परीक्षा के समय पेपर में शिक्षक थोड़ी ही मदद करता है। उस समय तो पेपर चेक करने वाला हो जाता है। इसलिए बाबा कहते हमेशा एवररेडी रहो। बच्चों का सोचना और करना दोनों ही समान हो, जो सोचा वह किया। अपने को सदा चेक करते रहना कि मेरी अवस्था क्या है?

10 अभी समय कम है इसीलिए अपनी कमियों को समझकर निकालो। हमारी स्थिति अच्छी होगी तो सेवा पीछे-पीछे आएगी। वाणी की सेवा नहीं भी हुई तो मन्सा तो मैं करूंगी। जो कहते हैं मेरा शरीर नहीं चलता, मैं सेवा नहीं कर सकती। लेकिन मन्सा सेवा तो अंत तक कर सकते हैं। अगर मन ठीक है तो दिमाग ठीक काम करता है तो मन्सा सेवा कर सकते हैं।

एक-एक सप्ताह तक रहती थीं मौन

दादी ने 14 वर्ष तक बाबा के सानिध्य में रहकर कठिन योग-साधना की। इन वर्षों में खाने-पीने को छोड़कर दिन-रात योग साधना में वह लगी रहती थीं। बाबा एक-एक सप्ताह का मौन कराते थे। तभी से दादी का स्वभाव बन गया था कि जितना काम हो उतना ही बात करती थीं। अंत समय तक वह मौन में रहीं। 23 मार्च 2020 में संस्थान की पूर्व मुय प्रशासिका 104 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी जी के अव्यक्त होने के बाद आपको संस्थान की मुय प्रशासिका नियुक्त किया गया था। अस्वस्थ होने के बाद भी आपको दिन-रात लोगों का कल्याण करने की भावना लगी रहती थी। दादीजी मुंबई से ही संस्थान की गतिविधियों का समाचार लेतीं और समय प्रति समय निर्देशन देतीं। दादी को नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय, बारीपाड़ा ने डी. लिट (डॉक्टर ऑफ लिटरेचर) की उपाधि से विभूषित किया था।

राजिम में संत सम्मेलन आयोजित : देशभर से आए अनेक संत-महात्माओं ने लिया भाग

सनातन संस्कृति की स्थापना में लगी है ब्रह्माकुमारीज़: महामंडलेश्वर

शिव आमंत्रण, राजिम/नवापारा (छग)।

प्रतिवर्ष माघ माह की पूर्णिमा तिथि से लेकर महाशिवरात्रि तक छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में महानदी पेरी सोडूर नदियों के त्रिवेणी संगम पर विशाल मेला लगता है, जिसे स्थानीय परंपरा में पुत्री मेला कहा जाता है। इसे राजिम कुंभ कल्प मेला नाम दिया गया है। इस मेले में संत समागम में भाग लेने न केवल देशभर से हजारों तीर्थ यात्री, नागा साधु, सन्यासी, विभिन्न पंत वरन विदेशी यात्री भी आते हैं।

इसी कड़ी में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर संत सम्मेलन का आयोजित किया गया। इसका विषय था- वर्तमान सनातन संस्कृति की रक्षा आध्यात्मिकता के द्वारा कैसे हो सकती है।

सम्मेलन में अयोध्या से आए महामंडलेश्वर गौरी शंकर महाराज ने कहा कि गौ रक्षा, गंगा रक्षा, गायत्री रक्षा से सनातन संस्कृति की रक्षा हो सकती है। आज गायों की बड़ी मात्रा में हिंसा हो रही है जिसके कारण प्रकृति बदला ले रही है। अनेक प्राकृतिक तूफान, अर्थक्वेक भूकंप इसी के कारण होते हैं।

बड़ौदा से पधारे महामंडलेश्वर शैलेशानन्द महाराज ने कहा कि सनातन शब्द एक वृहद शब्द है। जो हमें अध्यात्म में स्थित होना सिखाता है, उसकी रक्षा तभी हो सकती है कि जब हमारे विचारों में आध्यात्मिक ज्ञान बसा हो। हमें जाति, ऊंच-नीच, धर्म भेद लिंगभेद से ऊपर उठकर अपने को अविनाशी समझें, उस अविनाशी सत्ता की रक्षा करें, तभी इस धरा पर सनातन संस्कृति की स्थापना हो सकती है।

रुड़की से पधारे महामंडलेश्वर अनंतानंद महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान सनातन संस्कृति की स्थापना में लगी हुई है। इसका कारण आध्यात्मिकता इनके रग-रग में बसी हुई है। अगर आध्यात्मिकता नहीं होती तो यह संस्था कभी की खत्म हो जाती।

ऋषिकेश से पधारे महामंडलेश्वर स्वामी ईश्वर आनंद महाराज ने कहा कि मैं माउंट आबू भी गया उनके विभिन्न कार्यक्रमों में जाता रहता हूं। यहां इन बहनों की त्याग-तपस्या के कारण सनातन संस्कृति टिकी हुई है, जहां त्याग-तपस्या है, वह सनातन धर्म है। सनातन हमें अविनाशी गुणों की रक्षा करना सिखलाता है। इसके लिए आध्यात्मिकता की आवश्यकता होती है। आध्यात्मिकता अर्थात अपने को आत्मा निश्चय करना, जब हम आत्मा निश्चय करते हैं तो आत्मा के गुण स्वतः व्यवहार में आने लगते हैं।

सेवाकेंद्र संचालिका बीके पुष्पा दीदी ने कहा कि संत-महात्मा के जहां कदम पड़ते हैं वह भूमि पवित्र बन जाती है। इसलिए भारतीय संस्कृति में संतों का सम्मान सबसे बड़ा सम्मान माना जाता है। इंदौर से पधारे धार्मिक प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर बीके नारायण भाई ने कहा कि सनातन अर्थात अविनाशी जब हम अपनी आत्मा की रक्षा करते हैं तो आत्मा के गुण जैसे पवित्रता, शांति, प्रेम, आनंद, खुशी इनकी रक्षा हो जाती है। आज यह गुण प्रायः लोप हो गए हैं। इसकी रक्षा करना अर्थात अपने को आत्मा समझना यही सनातन संस्कृति की रक्षा हो सकती है।

रूस के लोगों में भारत के प्रति बहुत सम्मान की भावना है: चक्रधारी दीदी

शिव आमंत्रण, जबलपुर, मप्र।

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के प्रेमनगर स्थित शिव उपहार भवन में सुखी पारिवारिक जीवन के लिए मूल्य विषय पर महिलाओं के लिये प्रेरणादायक सत्र का आयोजन किया गया।

इसमें ब्रह्माकुमारीज की रशिया के सेवाकेंद्रों की निदेशिका व महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी चक्रधारी दीदी ने कहा कि रशिया में भारत देश के नागरिकों के प्रति बहुत सम्मान की भावना है, वे हमारी भूमि को देव भूमि के समान मानते हैं। परिवार का स्नेहमय होना, श्रेष्ठ होना किसी भी देश की बहुत बड़ी पहचान है। घर को यदि आश्रम बनाएंगे तो घर में पवित्रता, सुख, शांति, खुशी रहेगी। परिवार में आपस में प्यार, एकता, संगठित हो जाएं तो हमारा देश एकता के बल पर आगे बढ़ सकता है। आज परिवार में एकता और विश्वास लाने की जरूरत है। माउंट आबू से पहुंचीं प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सविता दीदी ने कहा कि महिलाएं ही परिवार की इकाई हैं और एक महिला परिवार की धुरी हैं और वही बच्चों में ये संस्कार देती हैं। कटंगा कॉलोनी सेवाकेंद्र की संचालिका बीके विमला दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके आरती दीदी ने किया।

शिविर में 150 मरीजों की जांची सेहत

शिव आमंत्रण, ग्वालियर, मप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग व सिम्स मल्टी स्पेशिलिटी हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में प्रभु उपहार भवन, माधोगंज में निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 150 से अधिक लोगों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। बीके प्रहलाद भाई ने बताया कि शिविर में सिम्स हॉस्पिटल, ग्वालियर के वरिष्ठ एवं अनुभवी चिकित्सकों द्वारा मरीजों का परीक्षण किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ सर्जन डॉ. ओपी शुक्ला, हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ डॉ. राजेश सिंह, जनरल फिजीशियन डॉ. विनोद शाक्य, महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. पूजा गौतम, नेत्र रोग सहायक श्री युवराज सिंह द्वारा मरीजों का निःशुल्क परीक्षण कर उचित परामर्श दिया गया तथा आवश्यक जांचें भी निःशुल्क की गईं। शुभारंभ अतिथियों एवं चिकित्सकों द्वारा परमपिता परमात्मा को याद कर किया गया। सिम्स हॉस्पिटल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. ओपी शुक्ला ने बताया कि इसमें जिन मरीजों का इलाज हेतु चयन किया जाएगा।

पुलिस मितान सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, रायपुर, छग। ब्रह्माकुमारीज़ के शांति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में पुलिस मितान सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ में मितान बनाने की एक सुंदर और मानवीय परम्परा रही है। आप सभी ने पुलिस को अपना मितान बनाकर सड़क सुरक्षा के लिए नागरिकों को जागरूक करने का संकल्प लिया है। रोड सेफ्टी के लिए किया गया कार्य अत्यंत पुण्य का कार्य है। पुलिस मितान साथियों के निरंतर प्रयासों से इन सड़क दुर्घटनाओं में निश्चित रूप से कमी आएगी और आम नागरिकों का जीवन अधिक सुरक्षित बनेगा। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि पुलिस से अच्छा कोई मितान नहीं हो सकता। रायपुर संचालिका बीके सविता दीदी, पुलिस महानिदेशक अरुण देव गौतम, एडीजीपी प्रदीप गुप्ता, एडीजीपी अमित कुमार, आईजी अमरेश मिश्रा, एसपी डॉ. लाल उम्मेद सिंह व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

ब्रह्माकुमारी विश्व की एकमात्र संस्था है जो धर्म के साथ-साथ मोक्ष की शिक्षा भी देती है

ब्रह्माकुमारीज़ एक श्रेष्ठ संस्कारशाला: महामंडलेश्वर

शिव आमंत्रण, हरिद्वार/उत्तराखंड।

ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक ब्रह्मा बाबा की पुण्य स्मृति (18 जनवरी, विश्व शांति दिवस) पर सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें हरि सेवा आश्रम ट्रस्ट के परमाध्यक्ष महामंडलेश्वर हरिचेतनानंद गिरि महाराज ने कहा कि ब्रह्मा बाबा का शरीर दिव्य, तेजोमय एवं असामान्य था, इसी कारण परमात्मा ने उनमें प्रवेश किया। ब्रह्माकुमारी विश्व की एकमात्र संस्था है जो धर्म के साथ-साथ मोक्ष की शिक्षा भी देती है। यह एक संस्कारशाला है, जहां से शांति एवं श्रेष्ठ संस्कार सीखकर उन्हें विश्व में फैलाने की प्रेरणा मिलती है।

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं महानिर्वाणी अखाड़ा के सचिव महामंडलेश्वर रविंद्र पुरी महाराज ने कहा कि 140 देशों में किसी संस्था का विस्तार होना किसी साधारण मानव के लिए संभव नहीं है। भले ही ब्रह्मा बाबा का पंचभौतिक शरीर आज हमारे बीच नहीं है, परंतु उनके द्वारा अर्जित दिव्य ऊर्जा का अनुभव आज भी सभी सेवाकेंद्रों पर किया जाता है। बाबा के कर्म, साधना और आराधना को जीवन में उतारना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

हरिद्वार के संतोषी मां मंदिर की परमाध्यक्षा महामहामंडलेश्वरी संतोषी मां ने कहा कि जब तक जीवन में नित्य, नैतिक अधिनियम एवं नियम नहीं होंगे, तब तक आध्यात्मिक उन्नति संभव नहीं है। अवतारों की श्रृंखला में दादा भी हैं, जिनमें साक्षात् भगवान शिव का प्रकटीकरण हुआ। शुद्ध आचरण, शुद्ध विचार एवं ब्रह्मचर्य जीवन पर दिया गया बल अत्यंत प्रेरणादायक है। देहरादून सबज़ोन एवं सर्किल की मुख्य संचालिका बीके मंजू दीदी ने कहा कि बाबा का जीवन कर्मयोगी, चलता-फिरता तपस्वी का था। सभी संतों ने बाबा को पुष्पांजली अर्पित की।

जयपुर, राजस्थान। पीस पैलेस सेवाकेंद्र पर शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में अभिमन्यु शर्मा, अध्यक्ष राज. सचिवालय सेवा अधिकारी संघ, सीताराम दास कदम महाराज, डूंगरीजी की शिष्यासाध्वी गुरु मां, अजमेर संभाग की संचालिका बीके शांता दीदी, पीस पैलेस प्रभारी बीके हेमलता दीदी व अन्य लोग मौजूद रहे।

रांची, झारखंड। ब्रह्माकुमारीज़ हरमू रोड में आयोजित महाशिवरात्रि महोत्सव में दीप प्रज्वलित करते विश्व हिन्दू परिषद के स्वामी उमेशानंद, अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष ज्योति सिंह मथारु, रांची विश्वविद्यालय के डीन रामेश्वर प्रसाद साहू, संत निरंकारी मिशन के संदीप नागपाल, संचालिका बीके निर्मला दीदी।

भोपाल, मप्र। ब्लेसिंग हाउस सेवाकेंद्र द्वारा आयोजित महाशिवरात्रि महोत्सव में हैवी इंडस्ट्रीज़ मंत्रालय की स्वतंत्र निदेशिका एवं योगाचार्य डॉ. आरएच लता, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके डॉ. रीना दीदी, चित्रकूट सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके दुर्गेश दीदी, बीके सोनू दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए।

हिसार, हरियाणा। महाशिवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष्य में नगर में संचालिका बीके रमेश कुमारी दीदी के नेतृत्व में भव्य एवं ऐतिहासिक 12 ज्योतिर्लिंग शोभा यात्रा निकाली गई। इसमें 600 से अधिक ब्रह्माकुमारी भाई-बहनों ने एकजुट होकर अनुशासन, शांति एवं आध्यात्मिक गरिमा के साथ सहभागिता की।

गौरझामर, मप्र। 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में देवरी विधायक बृजबिहारी पटेरिया, सागर क्षेत्र की निदेशिका बीके छाया दीदी, राहतगढ़ की संचालिका बीके नीलम दीदी, गौरझामर की संचालिका बीके लक्ष्मी दीदी, बीके खुशबू दीदी, बीके नेहा दीदी, बीके पार्वती दीदी व अन्य लोग मौजूद रहे।

सुरेंद्रनगर, हिमाचल प्रदेश। 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य पर आयोजित द्वादश ज्योतिर्लिंगम शोभा यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए एसडीएम अमर नेगी, सेवाकेन्द्र संचालिका बीके शिखा दीदी व अन्य। शोभायात्रा के माध्यम से लोगों को व्यसन विकारों से दूर रहने का संदेश दिया गया।

ब्यावरा, मप्र। महाशिवरात्रि पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में मप्र के राज्य मंत्री नारायण सिंह पवार, राजयोगिनी मधु दीदी (जिला प्रभारी राजगढ़), रामचंद्र दांगी (पूर्व विधायक), डॉ. कैलाश मिश्रा (समाजसेवी) , राधा देवी गुर्जर (जनपद अध्यक्ष) संचालिका बीके लक्ष्मी दीदी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

गया, बिहार। महाशिवरात्रि के पावन पर्व के उपलक्ष्य में नगर में शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें सतयुगी राज दरबार की झांकी सजाई गई। इस मौके पर संचालिका बीके सुनीता दीदी ने महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक महत्व बताया और सभी से जीवन में नशे से दूर रहने का आह्वान किया।

आगरा, उप्र। महाशिवरात्रि पर आर्ट गैलरी म्यूजियम सेवाकेंद्र द्वारा शिव संगम गार्डन, टीडीआई मॉल के सामने आध्यात्मिक, आयुर्वेदिक एवं मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. बीके भगवान दास भाई, प्रभारी बीके मधु दीदी, बीके माला दीदी, बीके संगीता दीदी ने संबोधित किया।

धूरी, पंजाब। धूरी स्थित सनातन धर्म सभा में 90वां त्रिमूर्ति शिव जयंती समारोह आयोजित किया गया। इसमें सेंटर की इंचार्ज बीके मूर्ति दीदी, बीके सुनीता दीदी, बरनाला से बीके बृज दीदी, तपा से बीके उषा दीदी, बीके डॉ. लेखराम शर्मा, बीके कांता दीदी सहित नगर के गणमान्य लोग मौजूद रहे।

घुवारा, छतरपुर, मप्र। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में ग्राम सटई में शिव ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उप सेवाकेंद्र की संचालिका बीके नीतू दीदी ने शिव जयंती का महत्व बताया। असाटी समाज महिला अध्यक्ष आदिश्री, निरंकार पाठक, बाबूलाल जोशी, अरुण सोनी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

मजलिस पार्क (दिल्ली)। 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में रॉ के अध्यक्ष तरुण गर्ग, माउंट आबू से प्रकाशित ज्ञानामृत की सम्पादिका बीके उर्मिला दीदी, बीके शारदा दीदी और सेवाकेन्द्र संचालिका बीके राजकुमारी दीदी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए शिवरात्रि का महत्व बताया और शिव झंडावंदन किया गया।

कादमा (हरियाणा)। 90 वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में बाढ़डा एसडीएम आशीष सांगवान, बीके गरिश्मा बहन, जिला पार्षद अशोक थालौर, बीके वसुधा बहन, सरपंच प्रतिनिधि महेश फौजी, सतबीर शर्मा, विकास शर्मा, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके वसुधा बहन ने दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया।

झोझूकलां (हरियाणा)। महाशिवरात्रि पर ज्ञान ज्योति भवन से निकाली गई शिव संदेश सद्भावना यात्रा का शुभारंभ व्यापार मंडल अध्यक्ष नरेश ठेकेदार, समाजसेवी महादेव बलाली, महिला कॉलेज शिक्षा समिति के अध्यक्ष सुरेंद्रपाल, सचिव सुशील सांगवान, अशोक थालौर, प्रभारी बीके वसुधा दीदी ने किया।

इंदौर, मप्र। 90वां त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में प्रेमनगर की प्रभागी बीके शशि दीदी ने शिव जयंती का महत्व बताया। सिन्धु सहकारी साख संस्था के अध्यक्ष जवाहर मंगवानी, वार्ड 65 के पार्षद कमलेश कालरा, सिख समाज के वरिष्ठ नागरिक अमोलक सिंह सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

स्वदर्शन चक्र फिराना माना 'स्व की स्मृति' में रहना

प्रेरणापुंज

राजयोगिनी दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

स्वदर्शन चक्र फिराना माना 'स्व की स्मृति' में रहना। देह-अभिमान वश जो अन्दर संकल्प-संस्कार में कुछ किचड़ा भरा हुआ है, जब तक वह है तब तक सुई साफ फ्री हो करके चुम्बक को नहीं खींचती, न स्वयं शान्ति और शुद्ध प्रेम का अनुभव करती है। तो पहले अपने संकल्प को शुद्ध शान्त बनाएं। कई बार अशुद्ध संकल्प अंदर घुस जाता है, क्योंकि पुराने संस्कार छिपे हुए हैं, चेंज नहीं हुए हैं।

बाबा से पहले-पहले हमको शान्ति और प्रेम मिला है। सुनने की भी समझ (अक्ल) पीछे आई है। पहले शान्ति और प्रेम ने अपने तरफ खींचा है। शान्ति और प्रेम ऐसी चीज है, जो सभी उसे स्वीकार करते हैं। आज दिन तक हमने कभी बाबा से कोई क्वेश्चन नहीं पूछा होगा। अपने आप मुरली से उत्तर मिलता है। सिर्फ वह अच्छी तरह से समझी हुई हो, धारणा की हुई हो, हमारे लाइफ में हो तो दूसरों को हम अपने जीवन से उदाहरण से उत्तर दे सकते हैं। मनुष्य से देवता बनने के पहले एंजिल बनने की पढ़ाई परमात्मा से पढ़ी है, उसकी अथॉरिटी है। योग से सब काम बाबा करा ही देंगे या कर लेंगे। जो कोई इंसान नहीं कर सकते हैं। हम आर्डनरी इंसान बदल गए। इंसान तो हम हैं ही नहीं, बाबा हमको जिस दृष्टि से देखता है और मैं भी जैसे बाबा को पहचानकर देखती हूं वह दृष्टि सदा सुखकारी, कल्याणकारी है। वह मेरी दृष्टि बनी रहे। दृष्टि का वृत्ति से कनेक्शन है। वृत्ति का सूक्ष्म संकल्प से है। शास्त्रों का सार भगवान ने सुनाया है, मैंने सुना है। सिर्फ कानों द्वारा नहीं सुना है, दिल में भर गया है। जब जो चाहे वह निकल सकता है। जिस घड़ी जो चाहें जहां जरूरत होगी वहां एक्यूरेट टाइम पर निकल आएगा और वह आत्माओं को टच हो जायेगा। तो कितने ऊँचे ते ऊँचे भगवान के महावाक्य हमारे कानों ने सुने हैं, दिल में भरा है तो फलक से निकल सकता है। फलक में अथॉरिटी है, स्नेह है, सच्चाई है। बनावटी बात नहीं सुना रहे हैं। किसके कान खुल जाएं। बाबा को ऐसे बच्चे चाहिए। अन्दर से फलक से जिगर से निकलेगा तो आंख खुलेगी। किसी को सुनाकर आओ तो उसके सामने फरिश्ता घूमता रहे - यह कौन आया था, क्या सुनाकर गया। हम सबको अंधकार से निकालने वाले हैं। बाबा ने हमको ज्ञान से, अपना बनाकर लाइट बना दिया है। ज्ञान की एक-एक बात इतनी अच्छी है जो सेकण्ड में हल्के हो जाते हैं। फिर बाबा के बच्चे बने तो हल्के बन गए। हमारा जवाबदार वह है। फिर जितना योगयुक्त रहे तो लाइट ही लाइट नजर आती है। जो ईश्वर को याद करने वाले होंगे, उनके आगे कोई देहधारी का नाम रूप नहीं आएगा। कहेंगे ईश्वर ज्योति है। तो बाबा जो सुनाता है, वह एक-एक बोल दिल को लग जाए तो जो हमारा आवाज निकलेगा वह दिलों को लगेगा, जिसमें भाषा का भी सवाल नहीं है। मधुबन का वायुमंडल जैसे हमको चैंज कर देता है। मधुबन में बाबा है, बाबा के साथ रहने वाले, आने वाले ही लाभ उठाने वाले हैं। यही आकर्षण सबको खींचती है। उसके लिए फिर विधान बनाने पड़ेंगे। हमारे नियम बने पड़े हैं, दिनचर्या, मर्यादाएं बने हुए हैं। हमने अपने नियम बनाकर रखें है, जिस नियम प्रमाण चलना है। नियम को कभी ढीला नहीं करना है। अगर एक बार लूज हुई तो कोई न कोई कारण बनता रहेगा। इसलिए कहते हैं - कायदे में फायदा है। जो कायदे में चलने वाले हैं उन्हें सदा फायदा ही फायदा है। उनके द्वारा औरों को भी फायदा होगा। हर एक को अपने लिए उन्नति के लिए नियम बनाने हैं। उसी प्रमाण चलना है। अपना भला करो तो सबका भला हो। नियम क्या कहता है? हमने नियम बना लिया कि 4 से 8 बजे सवेरे का समय अपने लिए है। भले कितनी ही कारोबार हो, यह समय मेरा अपने लिए है। किसी हालत में भी मुझे और कोई बात न सोचना है, न करना है। उसमें बल मिलता है। इस नियम ने बड़ा बल दिया है। एक क्लास के स्टूडेन्ट हैं, परिवार से प्रेम है, अलौकिक सेवा साथी भी हैं। दूसरा हमें कोई हद में नहीं आना है।

रियल लाइफ **प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक,** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

'बच्चों! अब मैं आया हूं, अब तो यह विकारों का गंदा धंधा छोड़ो!'

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ब्रह्मा बाबा कहते हैं कि- अब आप इस ईश्वरीय ज्ञान एवं योग बल द्वारा घर-गृहस्थ को चलाते हुए पवित्र रह कर दिखाओ तो इससे संसार का काफी उपकार होगा। देखो आपको आज ईश्वरीय ज्ञान देने की सेवा में जो ब्रह्माकुमारी बहने निमित्त है इन्हें तो पवित्र रहने का अधिकार न मिलने के कारण मज़बूरी से घर छोड़ना पड़ा अथवा इन पर तो सितम ढा-ढा कर इन्हें यह कदम लेने पर मजबूर कर दिया गया वरना तो गीता के भगवान शुद्ध प्रवृत्ति मार्ग ही स्थापित करने आते हैं। वे घर-बार छुड़ाने नहीं आते, वे तो घर को स्वर्ग बनाने आते हैं। आप सब कारोबार करो, परन्तु जिस बाप को आप बुलाते थे कि हे 'परमपिता' आप आओ और पतित से पावन बनाओ, अब वे कह रहे है कि ' बच्चो, अब मैं आया हूँ; अब तो यह विकारों का गन्दा धन्धा छोड़ो!

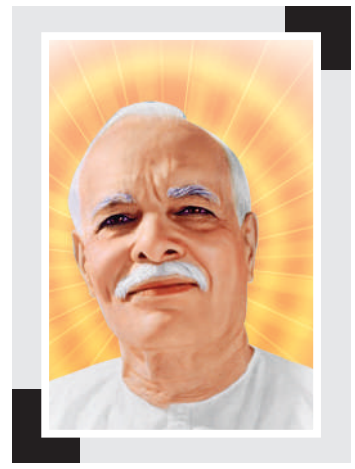

'देखो, आप अपने वास्तविक स्वरूप में हो तो 'आत्मा' ही ना? और प्रारम्भिक स्वरूप में आप थे तो पवित्र ही न? तो जबकि आप का स्वधर्म ही पवित्रता और शान्ति है तो उसमें स्थित होना असम्भव क्यों होना चाहिए? परन्तु वत्सो, यह सम्भव तभी होगा जब आत्मा-निश्चय (Soul-Conscious) बनेंगे और मुझ निराकार परमपिता परमात्मा शिव की स्मृति में रहेंगे। योग के बिना अथवा आत्मिक दृष्टि अपनाये बिना पवित्र रहना असम्भव है। अतः अब आप योग-युक्त होवो तो पवित्र बनने का बल स्वतः ही आपको प्राप्त होगा। आप इन्हें निकालते क्यों नहीं? जैसे कोई भी व्यक्ति अपने घर में किचड़े को सम्भाल कर नहीं रखना चाहता, तब आपने इन्हें अपने मन में क्यों रख रखा है? क्या आप इन्हें कोई अनमोल खज़ाना समझते हैं? वत्सो, इस हेय चीज़ को अब मेरे हवाले कर दो तो मैं आपको तली पर स्वर्ग का स्वराज्य दूँगा। वत्सो, मैं आपसे और कुछ नहीं माँगता, मुझे तो आप अपनी यह निकम्मी चीज़ दे दो। यह निकम्मी होती है, क्या आप इन्हें अपने काम की वस्तु मानते हो? अरे नहीं, इन्होंने ही तो सारा काम बिगाड़ा है। यह दुनिया जो पहले स्वर्ग थी, वह इन्हीं के द्वारा ही तो नर्क बनी है।

फिर बाबा समझाते - 'देखो, कुछ लोगों का धन्धा सट्टा-बट्टा करना होता है। वे पुराने कपड़े, पुरानी चीजें लेते हैं और उसके बदले में नए बर्तन या अन्य कुछ अच्छा सामान देते हैं। यह शिव बाबा भी मानो कि सट्टा-बट्टा करने वाले ही हैं। ये पुराने खराब संस्कार ले लेते हैं और उनके बदले में पवित्रता, दिव्य-गुण तथा जन्म-जन्मान्तर के लिए खुशी और आनन्द दे देते हैं। व्यवहार से सट्टे-बट्टे वाले लोग तो जितने मूल्य की चीज़ लेते हैं, उसके बदले में उससे कुछ कम ही दाम की चीज़ देते हैं परन्तु बाबा तो उससे कई गुणा अधिक, नहीं-नहीं अपार एवं अतुल खज़ाना दे देते हैं। क्या ऐसे शिव बाबा के साथ सट्टा-बट्टा नहीं करोगे? अपनी कमियाँ और कमज़ोरियाँ उसको देकर अपना भाग्य ऊँचा नहीं बनाओगे?'

इस प्रकार, बाबा जब मधुर ज्ञान-मुरली बजाते तो सभी अतीन्द्रिय सुख में झूम उठते। परन्तु संसार के लोग तो इसी भ्रम में हैं कि भगवान काठ की कोई मुरली बजाया करते थे अथवा किसी रत्न-जड़ित सोने की मुरली के स्वरों से वे गोप-गोपियों को सुख दिया करते। क्रमशः

अव्यक्त इशारे **राजयोगिनी दादी हृदयमोहनी (गुलजार दादी),** पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

विदेही माना देह का भान अपने तरफ नहीं खीचे

Q दादीजी हमारा विचार सागर मंथन आप जैसा बनाने के लिए किस बात का अटेन्शन रखें ?

A हम विचार सागर मंथन या मनन किस बात पर करेंगे ? जो बाबा ने दिया है, उसी पर ही मनन करेंगे, मन की बातों पर तो मनन नहीं करेंगे। हम मनन करके कोई बाहर की स्टोरीज़ आदि भी नहीं सुना सकते। वह तो भक्तिमार्ग वाले हमसे अच्छी स्टोरीज़ जानते हैं, सुनाते हैं। जैसे हम बाबा की प्वाइंटस को प्रैक्टिकल में स्वयं अनुभव करके, विस्तारपूर्वक बुद्धि में स्पष्ट करके दूसरों को सुनाते हैं। उसमें अपनी मिक्स नहीं करते। मिक्स करने से आत्माओं को इतना फायदा नहीं होता। अगर कोई स्टोरी रूप में सुनाता है तो वह अपने में फंसाता है और अपने में फंसाना यह बहुत बड़ी गलती है। कहेंगे यह बहन बहुत अच्छी है। यह बहुत अच्छा सुनाती है। अच्छी तरह से स्पष्ट करके सुनाती है। अरे, बहन ने लाया कहां से? बाप से लाया।

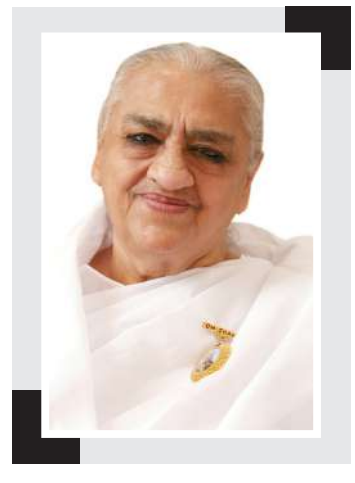

मानो कोई मेरे गुण को देख करके मेरे तरफ़ आकर्षित होते हैं, दादी बहुत अच्छी है, दादी से बहुत कुछ मिलता है, लेकिन दादी ने लाया कहां से? बाबा से लाया ना! मेरे तरफ अगर कोई आकर्षित होता है तो यह वास्तव में हमारी गलती है। ऐसे नहीं मैं बहुत होशियार हूं इसलिए सब मेरे पीछे पड़ते हैं। यह खुशी की बात नहीं है। यह सेवा की सफलता नहीं है। यह आत्माओं को अपने में फँसा के बाबा से बेमुख करना है। बिचारा वंचित रह जाएगा क्योंकि आत्मा को, आत्मा से वर्सा नहीं मिल सकता। वर्सा बाप से ही मिलता है। तो अगर बाप से उसका कनेक्शन नहीं जोड़ा, तो उस आत्मा के कल्याण के निमित्त बनें या अकल्याण के? क्योंकि आजकल की दुनिया बॉडी कान्सेस बहुत है। वह विदेही बाप को बहुत मुश्किल से पहचान सकते हैं, इसलिए देह में फंसना तो उन्हों को आदत है, चाहे अलौकिक देह में, चाहे लौकिक में फंसे - वह तो उन्हों का 63 जन्म का संस्कार है। वह तो जल्दी फंस जाते हैं लेकिन हमको अटेन्शन रखना है कि कोई भी आत्मा मुझ देहधारी की आकर्षण में नहीं आए। गुणों की आकर्षण में भी आते हैं तो भी रांग है, गुण दिया किसने? अच्छा, सेवा में बहुत अच्छी है, सेवा सिखाई किसने ? तो फाउन्डेशन यह होना चाहिए कि जिज्ञासु का बुद्धियोग बाप से जुटे।

परमात्मा से उसे कुछ प्राप्ति हो। मेरा भाषण सुनकर सिर्फ अच्छा-अच्छा नहीं कहे। इस बात का बहुत अटेन्शन चाहिए। इसके लिए पहले हमारा कनेक्शन शिवबाबा से ठीक जुटा रहे। इसलिए कभी भी अपना मनन नहीं करना। बाबा की प्वाइन्ट्स का मनन करना और मनन करके बाबा की स्टोरी, बाबा के यज्ञ की कोई स्टोरी है वह भले सुनाओ लेकिन बाहर की स्टोरीज़ नहीं सुनाओ। उसे सुनने में तो मजा आएगा लेकिन प्राप्ति कुछ नहीं होगी, इसीलिए इसका अटेन्शन रखना है।

Q दादी जी, अशरीरी, विदेही और आत्म-अभिमानी स्थिति का अनुभव क्या है ?

A विदेही माना देह का भान अपने तरफ खीचें नहीं। हम आत्मा इस देह में हैं, आत्मा बनके शरीर से कर्म करा रहे हैं। आत्मा बनके और उस आत्मिक स्थिति में स्थित होके कर्म भी कर रहे हैं, चल भी रहे हैं, सब कुछ कर रहे हैं- वह आत्म-अभिमानी स्थिति है। शरीर में रहते हुए भी आत्मा जैसे मालिक बनकर कर्म करा रही है। और अशरीरी माना शरीर में हैं लेकिन शरीर के भान में नहीं आवें, बिल्कुल ही जैसे न्यारे हैं। शरीर का भान हमको नीचे नहीं खींचता है। जो विदेही अवस्था है वह है परमधाम की स्टेज। एकदम देह रहित आत्मा, जैसे बाबा देह से मुक्त है! जैसे कि देह है ही नहीं! वैसे हम आत्माएं भी असली रूप में तो देह में थे ही नहीं, पीछे आए पार्ट बजाया फिर हम देहधारी बनें तो विदेही अवस्था जो है वह है परमधाम की स्टेज।

जो बिल्कुल ही हम परमधाम में विदेही बाबा के साथ एकदम विदेही स्थिति में स्थित हो जायें। तो इन तीनों स्टेजेस का लगभग साथ-साथ का कनेक्शन है। आत्म-अभिमानी अर्थात् आत्मा कर्मेइन्द्रियों का मालिक है। अशरीरी माना कर्म करते शरीर और कर्म के भान से न्यारा हो जाए। विदेही अवस्था है बिल्कुल देह के भान से परे परमधाम निवासी आत्मा बन जाएं। बाकी विस्तार तो बहुत है।

तिरुवनंतपुरम में ओम शांति भवन का उद्घाटन

संस्था असंख्य लोगों को शांति, स्थिरता और आध्यात्मिक आश्रय प्रदान कर रही है : राज्यपाल

शिव आमंत्रण, तिरुवनंतपुरम, केरल।

ब्रह्माकुमारीज़ तिरुवनंतपुरम में ओम शांति भवन का उद्घाटन केरल के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर, संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी ने किया।

समारोह में राज्यपाल आर्लेकर ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ की भूमिका विश्व में शांति का मंत्र प्रसारित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। यह एक ऐसा आध्यात्मिक आंदोलन है, जो लगभग 90 वर्ष पूर्व एक छोटे से बीज के रूप में प्रारंभ हुआ था और आज एक विशाल वृक्ष बनकर असंख्य लोगों को शांति, स्थिरता और आध्यात्मिक आश्रय प्रदान कर रहा है। राज्यपाल ने ओम शांति भवन को आध्यात्मिक जागरूकता और मानवीय मूल्यों के संवर्धन का सशक्त केंद्र बताते हुए इसके माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन की कामना की। संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी ने कहा कि ध्यान और आध्यात्मिकता व्यक्ति को भीतर से सशक्त बनाते हैं, जिससे समाज में विश्वास और एकता की भावना विकसित होती है। ओम शांति भवन केवल एक भवन नहीं, बल्कि आत्मशांति और विश्वकल्याण की दिशा में एक आध्यात्मिक दीपस्तंभ है। महापौर वीवी राजेश ने कहा कि यह संस्था समाज में नैतिक मूल्यों, नारी सशक्तिकरण और आध्यात्मिक शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

तमिलनाडु, दक्षिण केरल एवं पुदुचेरी की सेवा समन्वयक बीके बीना बहन और बीके मिनी बहन ने केंद्र की गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि यहां नियमित रूप से राजयोग ध्यान, आध्यात्मिक सत्र, व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम और सामाजिक जागरूकता अभियान संचालित किए जाएंगे। ओम शांति भवन का उद्घाटन तिरुवनंतपुरम में आध्यात्मिक सेवाओं के एक नए अध्याय की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है, जो आने वाले समय में समाज को आंतरिक शांति, सकारात्मक सोच और मानवीय मूल्यों से जोड़ने का कार्य करेगा।

शिव आमंत्रण, मॉस्को, रूस। मॉस्को और पेट्रोज़ावोद्स्क में महाशिवरात्रि के पावन उपलक्ष्य में 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। साथ ही शिव के पुनरागमन विषय पर नाट्य प्रस्तुति से दर्शाया गया कि एक समय धरती पर दिव्य गुणों का राज्य था। आत्मसम्मान, प्रेम, धैर्य, सहनशीलता और सहयोग जीवन का आधार थे। बीके सुधा दीदी ने सभी को शिव जयंती का महत्व बताया।

शिव आमंत्रण, ग्वांगझू (चीन)। भारत के महावाणिज्य दूतावास, ग्वांगझू द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। इस दौरान बीके सपना दीदी के मार्गदर्शन में डायमंड कल्चर ग्रुप की बीके बहनों ने भारतीय संस्कृति, देशभक्ति और आध्यात्मिक मूल्यों का सुंदर प्रदर्शन प्रस्तुत किया। इसमें प्रतिष्ठित चीनी संगठनों के प्रतिनिधियों सहित भारत के अनेक चीनी मित्रों को भी आमंत्रित किया गया था।

शिव आमंत्रण, अटलादरा, गुजरात। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में व्यापारी वर्ग के लिए मानसिक एवं भावनात्मक समस्याओं का समाधान विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में मुंबई से पधारे डॉ. ईवी स्वामीनाथन भाई ने विचार व्यक्त किए। आभार सेवाकेंद्र संचालिका बीके डॉ. अरुणा बहन ने माना। सेमीनार में बड़ी संख्या में व्यापारीगण मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, झंझारपुर (मधुबनी), बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पधारने पर भारत के उभरते हुए 9 वर्षीय लेखक डॉ. आदर्श भारद्वाज और उनके पिताजी डॉ. सुरविंद कुमार झा को ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए बीके विनीता बहन। बता दें कि आदर्श भारद्वाज ने अपनी अद्भुत लेखन क्षमता और प्रतिभा के बल पर कम उम्र में अपने नाम कई विश्व रिकार्ड किए हैं।

तनाव एवं भागदौड़ से दूर आध्यात्मिकता एवं शांति की अनुभूति का बनेगा केंद्र

आध्यात्मिक संग्रहालय व डिवाइन विजडम पार्क का भूमिपूजन

शिव आमंत्रण, भोपाल, मप्र।

विश्व प्रसिद्ध भोजपुर मंदिर के निकट ब्रह्माकुमारीज़ के ब्लेसिंग हाउस भोपाल द्वारा प्रस्तावित आध्यात्मिक संग्रहालय एवं डिवाइन विजडम पार्क का भूमिपूजन गुजरात से पधारीं वरिष्ठ राजयोगिनी बीके शारदा दीदी की उपस्थिति में किया गया।

शारदा दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्थाएं समाज में मूल्यों का पुनर्निर्माण करने में निरंतर प्रयास कर रही हैं। शांति, शक्ति और दिव्य गुणों का प्रकाश स्तंभ बनकर मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाने का श्रेष्ठ कार्य इस पावन स्थल द्वारा होगा। ब्लेसिंग हाउस की प्रभारी बीके डॉ. रीना दीदी नें कहा कि क्षेत्र में नया परिसर समाज को मूल्यनिष्ठ बनाने के लिए और अधिक कार्यक्रमों और गतिविधियों को लागू करने में मदद करेगा। मप्र मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष अवधेश प्रताप सिंह ने कहा कि यह केंद्र मनुष्यों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का स्थान बनेगा।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, विले पार्ले (मुंबई)। आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन के संस्थापक आध्यात्मिक गुरु श्रीश्री रविशंकर से बीके अमृता दीदी व डॉ. दीपक हरके ने स्नेहभरी मुलाकात की। संस्था की गतिविधियों से अवगत कराते हुए परमात्मा शिव बाबा स्मृति चिंह्न भेंट किया।

शिव आमंत्रण, बारामती, महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारीज़ की बहनों ने नवनिर्वाचित उपमुख्यमंतरी सुनेत्रा पवार से मिलकर उनके पति के निधन पर सांत्वना दी। अहिल्यानगर सेवाकेंद्र के सह प्रभारी बीके सुप्रभा दीदी, बीके सोनाली दीदी, बीके डॉ. दीपक हरके ने मुलाकात कहा कि इस दुखद घड़ी में हम सब आपके साथ हैं। ईश्वर परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति दे।

शिव आमंत्रण, हांसी, हरियाणा। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने गणतंत्र दिवस समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ हांसी की निदेशिका बीके लक्ष्मी दीदी को उनके द्वारा समाज में की जा रहीं सामाजिक सेवाओं, आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं की सराहना की।

शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग। ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग भवन सेवाकेंद्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी स्वाति दीदी को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए वैश्विक नेटवर्किंग और व्यवसाय वृद्धि संगठन में बिल्हा विधानसभा के विधायक धरमलाल कौशिक, क्रेडा अध्यक्ष भूपेंद्र सवन्नी, बीएनआई मेला के अध्यक्ष किरणपाल सिंह चावला ने सीजी लाइफ टाइम कॉन्ट्रिब्यूशन अवार्ड से सम्मानित किया।

शिव आमंत्रण, पन्ना, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के समाजसेवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे देशव्यापी अभियान संगम: गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एंव सम्मानित जीवन के तहत सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र संचालिका बीके सीता दीदी ने लायनेस क्लब की पदाधिकारियों का सम्मान कर राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया।

सखी मिनीथॉन में 2500 महिलाओं ने लिया भाग

डॉ. नलिनी दीदी की पुण्य स्मृति में आयोजन

शिव आमंत्रण, मुंबई।

ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबजोन द्वारा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी डॉ. नलिनी दीदी की पावन पुण्य स्मृति में 'सखी मिनीथॉन 2026' का विराट आयोजन आचार्य अत्रे क्रीड़ा मैदान, पंतनगर, घाटकोपर (पूर्व) में किया गया। इसमें 2500 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। सबसे पहले जुम्बा प्रशिक्षिका हमिना गोस्वामी ने वार्मअप कराया। इसके पश्चात 4 किलोमीटर की मिनीथॉन दौड़ का शुभारंभ हुआ। इसमें विभिन्न आयु वर्ग, पेशों और सामाजिक पृष्ठभूमि की महिलाओं ने एक साथ कदम मिलाते हुए फिटनेस और आत्मविश्वास का परिचय दिया। मिनीथॉन का 'फ्लैग ऑफ' राजयोगी ब्रह्माकुमार निकुंज, डॉ. निरंजन हिरानंदानी (प्रसिद्ध उद्योगपति एवं हिरानंदानी समूह के

मैनेजिंग डायरेक्टर), पद्मभूषण डॉ. सुरेश आडवाणी, राजयोगिनी शकू दीदी (प्रभारी, घाटकोपर सबजोन), सुजाता इलावे (मिसेज इंडिया इंटरनेशनल क्वीन 2021 तथा वरिष्ठ राजयोग शिक्षिकाओं – बीके विष्णुप्रिया दीदी, बीके नीलिमा दीदी सहित प्रतिभागी महिलाएं मौजूद रहीं।

वरिष्ठ नागरिकों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, चौपना, बैतूल, मप्र।

ब्रह्माकुमारी संस्थान के समाजसेवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे देशव्यापी अभियान संगमः गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन के तहत वरिष्ठ नागरिकों के लिए राजयोग ध्यान एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान सभी वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य वृद्धजनों को सम्मानजनक, सुरक्षित एवं सकारात्मक जीवन के लिए प्रेरित करना था। ब्रह्माकुमारी पूर्णिमा दीदी ने राजयोग ध्यान को मानसिक शांति एवं आत्मबल का सशक्त माध्यम बताया। ब्रह्माकुमार नंदकिशोर भाई ने मूल्यों पर आधारित जीवन जीने का संदेश दिया, बीके सविता बहन ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया।

इस अवसर पर सामाजिक सुरक्षा अधिकारी नीतू सिंह नररे, नारायण चंद्र (अधीक्षक, अपना घर आश्रम) एवं दिलीप कुमार (जनपद सदस्य, घोड़ाडोंगरी) ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में विभिन्न सकारात्मक गतिविधियां कराई गईं। उपस्थित सभी अतिथियों एवं वरिष्ठ नागरिकों ने ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा किए जा रहे सेवाभावी कार्यों की सराहना की।

शिव आमंत्रण,कूचबिहार गुंजाबाड़ी, पश्चिम बंगाल | ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में माउंट आबू से पधारे संस्थान के अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके शीलू दीदी, गायक बीके भानू भाई, पूर्व केंद्रीय मंत्री कैलाश कुमार, समाजसेवी भोलाजी, कूचबिहार सेवाकेंद्र की संचालिका बीके शमपा बहन ने अपने विचार व्यक्त किए।

शिव जयंती पर किया ध्वजारोहण

नौगांव, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा राजा साहब के बंगले पर 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव के तहत शिव ध्वजारोहण किया गया। छतरपुर से पधारीं बीके शैलजा दीदी, बीके नंदा दीदी, बीके कल्पना दीदी, पूर्व विधायक मानवेंद्र सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए।

छतरपुर: बालिका दिवस मनाया

छतरपुर, मप्र। विश्वनाथ कॉलोनी सेवाकेंद्र पर बालिका दिवस मनाया गया। इसमें महोबा रोड स्थित शासकीय उत्कृष्ट बालिका छात्रावास अनुसूचित जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित छात्रावास से बालिकाओं को ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर बुलाया गया था।।

आपसी एकता एवं विश्वास के लिए परचिंतन, परदर्शन और परमत के पर काटना जरूरी है: बीके शैलजा दीदी

शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ के किशोर सागर सेवाकेंद्र द्वारा ऑडिटोरियम में विश्व एकता एवं विश्वास के लिए नए वर्ष की नई आशाएं' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के तौर पर विधायक ललिता यादव, भाजपा प्रदेश मंत्री अर्चना सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष ज्योति चौरसिया उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम में भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, सिवनी मालवा, बैतूल, हरदा, बीना, विदिशा, ग्वालियर, मुरैना, झांसी डबरा ललितपुर से ब्रह्माकुमार भाई-बहनों का आगमन हुआ। सभी भाई-बहनों व अतिथियों का मुकुट, चुनरी एवं

त्रिशूल देकर सम्मानित किया गया। छतरपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा दीदी ने कहा कि हमें किसी भी संगठन की मजबूती और एकता के लिए विश्वास की आवश्यकता है। आपसी एकता एवं विश्वास के लिए तीन पर के पर काटना बहुत जरूरी है वह हैं- परचिंतन, परदर्शन, परमत। इन तीनों को खत्म करके परोपकार की भावना को जागृत करना है।

निस्वार्थ प्रेम से खिल उठे वृद्धजन के चेहरे

शिव आमंत्रण, सारनाथ, बनारस।

ब्रह्माकुमारीज़ के क्षेत्रीय कार्यालय सारनाथ के तत्वावधान में समाज सेवा प्रभाग के तहत सारनाथ स्थित माता-पिता धाम वृद्धाश्रम में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मोटिवेशनल स्पीकर बीके तापोशी दीदी ने कहा कि हमारे वृद्धजन हमारे रक्षक हैं। उनके अनुभव और पालना की शीतल छांव हमें जीवन की कठिन समस्याओं रुपी तपिश से बचाती है। वृद्धजन हमें श्रेष्ठ संस्कार रुपी फल देकर हमारे जीवन को सशक्त बनाते हैं। इसलिए अपने परिवार के वृद्धजनों की पालना हमारे लिए आवश्यक है तो इनके सुख:दुख का ख्याल रखकर सम्मान देना हमारा कर्तव्य।

जिला भाजपा उपाध्यक्ष भाजपा उमेश कुमार ने कहा कि वृद्धजनों की सेवा हमारा सौभाग्य है। बीके विपिन भाई ने कहा कि आपका अनुभव हमें जीवन का सच्चा मार्ग दिखाता है। कार्यक्रम में महेश कुमार, बीके अनिता बहन, बीके परी बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। वृद्धाश्रम के प्रबंधक धीरेंद्र राय ने ऐसे सुखद आयोजन के लिए संस्था का आभार जताया।

इस दौरान ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा वरिष्ठजन के लिए खाद्य पदार्थ के साथ आवश्यक सामाग्री का वितरण किया गया। संस्था के बहन-भाईयों का नि:स्वार्थ प्यार और स्नेह से माता-पिता धाम वृद्धाश्रम के वरिष्ठ नागरिक गदगद हो गए। क्षेत्रीय कार्यालय सारनाथ के संयोजन, क्षेत्रीय निदेशिका बीके सुरेंद्र दीदी, प्रबंधक बीके दीपेंद्र की प्रेरणा से आयोजित उक्त कार्यक्रम में बीके नैना, बीके दिनेश, बीके मनिषा, बीके लक्ष्मी भी मौजूद रहीं।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य 210 रुपए तीन वर्ष 630 रुपए

मो 9414172596, 8521095678

Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

प्रधान संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331

Scan To Pay

ब्रह्माकुमारीज़ पालक्काड का स्वर्ण जयंती समारोह

आज विश्व को सबसे अधिक आंतरिक शांति, विश्वास और सामूहिक एकता की आवश्यकता है: जयंती दीदी

शिव आमंत्रण, पालक्काड (केरल)।

ब्रह्माकुमारीज़ पालक्काड की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर संगमोत्सवम् 2026 स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन कोट्टायिल कन्वेंशन सेंटर, एडाथरा, पालक्काड में किया गया। इस दो दिवसीय ऐतिहासिक समारोह में आध्यात्मिक चेतना, एकता और विश्वास का प्रेरणादायी वातावरण देखने को मिला। पालक्काड में ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाएं वर्ष 1976 में प्रारंभ हुई थीं। आज यह सेवा विस्तार पाकर शिवज्योति भवन, कल्पथी बाइपास रोड, पालक्काड स्थित जिला मुख्यालय के माध्यम से संचालित हो रही है। राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मीना दीदी के नेतृत्व में पालक्काड एवं मलप्पुरम जिलों में 30 उपसेवा केंद्रों के माध्यम से आध्यात्मिक एवं सामाजिक सेवाएं निरंतर प्रदान की जा रही हैं, जिनमें 25 समर्पित भाई-बहनों का विशेष सहयोग उल्लेखनीय है।

स्वर्ण जयंती समारोह की मुख्य अतिथि ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी जयंती दीदी ने कहा कि वर्तमान समय में विश्व को सबसे अधिक आवश्यकता आंतरिक शांति, आपसी विश्वास और सामूहिक एकता की है। ध्यान ही इन मूल्यों को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम है। आपने उपस्थित जनसमूह को राजयोग मेडिटेशन से गहन शांति की आध्यात्मिक अनुभूति भी कराई।

समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, राजयोगिनी हंसा दीदी, तमिलनाडु, पुंडुचेरी एवं दक्षिण केरल की जोनल सेवा समन्वयक राजयोगिनी बीना दीदी सहित केरल एवं तमिलनाडु के वरिष्ठ राजयोगियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर पालक्काड के सांसद वीके श्रीकंदन, नेहरू ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन एडवोकेट कृष्णदास, पूर्व विधायक केए चंद्रन, आईपीएस अधिकारी

एमपी दिनेश सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। स्वामी चिदानंदपुरी (अद्वैत आश्रम, कोलाथुर), स्वामी अशेषानंद (चिन्मय मिशन), स्वामी स्वरूपानंद (शिवानंद आश्रम), महामंडलेश्वर स्वामी प्रभाकरानंद, स्वामी कृष्णात्मानंद (दयानंद आश्रम), स्वामी देवानंदपुरी (श्रीशंकर अद्वैत आश्रम), स्वामी पूर्णानंद तथा श्री रामकृष्ण आश्रम, वडक्कनचेरी ने जयंती दीदी का पारंपरिक 'पूर्णकुंभ' स्वागत कर आध्यात्मिक सौहार्द्र एवं एकता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। 'संगमोत्सवम् 2026' केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि 50 वर्षों की सेवा, समर्पण और आध्यात्मिक जागरण की यात्रा का सजीव प्रतीक बनकर उभरा। इस दौरान हजारों श्रद्धालुओं ने आध्यात्मिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने और समाज में शांति, प्रेम एवं सद्भावना का संदेश फैलाने का संकल्प लिया। यह स्वर्ण जयंती समारोह ब्रह्माकुमारीज़ की गौरवपूर्ण सेवा-यात्रा का प्रतीक बनकर नई ऊर्जा और प्रेरणा प्रदान करता है।

आध्यात्मिक जागरूकता और मानसिक शांति का केंद्र बनेगा भवन

शिव आमंत्रण, भीलवाड़ा, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित शास्त्री नगर सेवाकेंद्र भवन का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीचंद कृपलानी (विधायक एवं पूर्व यूडीएच मंत्री) द्वारा किया गया। समारोह में भीलवाड़ा सांसद दामोदर अग्रवाल, विधायक अशोक कोठारी, पूर्व सांसद सुभाष बहेड़िया, नगर निगम महापौर राकेश पाठक, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा सहित कैलाश कृपलानी और रमेश सबनानी जैसे कई वरिष्ठ जनप्रतिनिधि एवं प्रबुद्ध नागरिक उपस्थित रहे। संस्था की क्षेत्रीय संचालिका बीके इंदिरा दीदी, बीके तारा दीदी और बीके अमोलक भाई की गरिमामयी उपस्थिति रही। उद्घाटन समारोह में

न केवल स्थानीय निवासी, बल्कि देश-विदेश से आए लगभग 1000 भाई-बहनों ने शिरकत की। सेवाकेंद्र संचालिका बीके तरुणा दीदी ने बताया कि यह नया केंद्र समाज में आध्यात्मिक जागरूकता, मानसिक शांति और सकारात्मक जीवन मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित रहेगा। यहां आने वाले साधकों को राजयोग के माध्यम से तनावमुक्त जीवन जीने की कला सिखाई जाएगी। साथ ही विभिन्न तनावमुक्ति के कार्यक्रम चलाए जाएंगे।

अमरावती में डिजिटल वेलनेस को लेकर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, अमरावती, महाराष्ट्र।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा होटल महफिल इन में आज की डिजिटल युगीन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए बच्चों एवं अभिभावकों में जागरूकता लाने के लिए अभिभावक एवं बच्चों हेतु डिजिटल वेलनेस विशेषकर मोबाइल उपयोग विषय पर एक जागरूकता सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हप्पी (होलिस्टिक एप्रोच फॉर पॉजीटिव पेरेंटिंग इनीटेटिव) एवं डिजिटल वेलनेस कार्यक्रम का राष्ट्रीय स्तर पर शुभारंभ भी किया गया। शुरुआत बीके अमोल भाई द्वारा प्रस्तुत प्रेरणादायी गीत भारत फिर

भरपूर बनेगा से हुई, जिसने संपूर्ण वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा और सकारात्मकता से भर दिया। अमरावती जिला संचालिका बीके सीता दीदी ने सेमीनार का उद्देश्य बताया। प्रमुख वक्ता डॉ. सचिन परब (मुंबई) ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके सुहिता दीदी ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में नगर के गणमान्यजन मौजूद रहे।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन, आबू रोड

ब्रह्माकुमारीज़ का दिव्य सफर 'नवदशकोत्सव'

किसी संस्था, संगठन और व्यक्ति के जीवन में 90 वर्ष का कालखंड ऐतिहासिक, गौरवपूर्ण और अनुभवों की विरासत लिए होते हैं। शतक के करीब पहुंचने की यह यात्रा यदि विश्व बदलाव, व्यक्ति परिवर्तन और दिव्य अनुभूतियों से प्रेरित हो तो महानता के नए मापदंड स्थापित करती है। वर्ष 1936 में विश्व शांति के महायज्ञ (ब्रह्माकुमारीज़) की नींव रखी गई। इसके प्रणेता बने दादा लेखराज, जिन्हें परमात्मा ने दिव्य नाम दिया- प्रजापिता ब्रह्मा। एक साक्षात्कार ने बाबा ब्रह्मा के जीवन की दिशा बदल

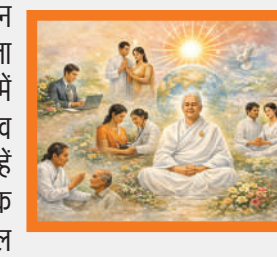

दी और उसी पल उन्होंने विश्व शांति के इस महायज्ञ में सर्वस्व न्यौछावर कर अध्यात्म के मार्ग पर निकल पड़े। राह कठिन थी लेकिन इरादा उतना ही अडिग, अचल और दृढ़ था। इस पवित्र राह में उन्होंने अनेक विषम परिस्थितियों, विरोधों, तिरस्कार और अपमान रूपी जहर को अमृत समझकर खुशी-खुशी सामना किया। यह वह दौर था, जिसमें नारी को अबला समझा जाता था, उसे समाज में वह सम्मान नहीं मिलता था जो आज प्राप्त है। ऐसे समय में आपने विश्व शांति के इस महायज्ञ की बागडोर माताओं- बहनों के हाथ में सौंप दी। सदा खुद से आगे उन्हें रखा।

ब्रह्माकुमारीज़ का नाम सुनते ही जेहन में एक पवित्र, दिव्य ऊर्जा से ओतप्रोत संस्था और संगठन का नाम उभर कर आता है। नारी शक्ति द्वारा संचालित दुनिया का सबसे विशाल एक ऐसा संगठन जहां न कोई कर्मकांड, न धर्म भेद, न जातिभेद, न गुरु-शिष्य परंपरा, न उत्तराधिकारी परंपरा। यहां एक ही रिश्ता है आत्मीयता का। यह रिश्ता सबसे प्रबल और महान है। यहां कोई गुरु है तो एक परमपिता शिव परमात्मा। संगठन की विरासत है- आध्यात्मिक ज्ञान और सहज राजयोग ध्यान। ब्रह्माकुमारीज़ आज अपनी स्थापना के 90 वर्ष के कालखंड में पहुंच चुकी है, जो शतक के करीब है। इतनी लंबी यात्रा के बाद भी यहां ज्ञान से लेकर व्यवस्था को लेकर कोई मतभेद नहीं है, क्योंकि यहां किसी की मनमत न होकर एक परमात्मा की श्रीमत के आधार पर संचालन किया जाता है। सच्चाई, सफाई, सादगी, पवित्रता और सामाजिक परिवर्तन की प्रतीक बन चुकी ब्रह्माकुमारीज़ की आध्यात्मिक शिक्षा का प्रभाव आज समूचे भूमंडल पर फलित हो रहा है। पाश्चात्य संस्कृति में डूबे देश भी इस दिव्य ज्ञान और राजयोग की दिव्य अनुभूति के सागर में गोते लगा रहे हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ की सफलता के मुख्य आधार-

1. स्पष्ट आध्यात्मिक ज्ञान: यहां दिए जा रहे आध्यात्मिक ज्ञान में किसी तरह का कोई विरोधाभास नहीं है। हर बात तार्किक और वैज्ञानिक रीति से स्पष्ट और सत्य है। यहां स्व परिवर्तन पर जोर दिया जाता है। यहां ज्ञान का मूल आधार- आत्मा और परमात्मा के सत्य ज्ञान पर आधारित है।

2. राजयोग मेडिटेशन: यहां की मुख्य शिक्षा राजयोग है, जो तन-मन को सशक्त बनाकर जीवन जीने की कला का विकास करता है। इसके साक्षी आज लाखों लोग हैं। राजयोग ध्यान सरल होने के साथ प्रभावी, सैद्धांतिक, वैज्ञानिक है। इसमें कोई अंधश्रद्धा और अंधविश्वास के लिए कोई जगह नहीं है।

3. नारी नेतृत्व: यहां की सफलता का मुख्य आधार है नारी शक्ति के हाथों में संपूर्ण बागडोर होना। इससे प्रशासन सख्त, सुदृढ़, कुशल, अनुशासित है।

4. निःस्वार्थ सेवाभाव: इस ज्ञान से व्यक्ति के अंदर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना विकसित हो जाती है। इससे वह तन-मन-धन से निःस्वार्थ सेवाभाव से अपने सहयोग रूपी हाथ बढ़ाता है। उसे जन कल्याण सर्वोपरि हो जाता है।

5. हर वर्ग पर फोकस: यहां हर वर्ग, आयु के लोगों को उनका जीवन आसान, सरल, सुखमय और शांतिमय बनाने के लिए कोर्स डिजाइन किए गए हैं। आत्म चेतना से शुरू हुआ यह कारवां आज सामाजिक परिवर्तन की नींव बन गया है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के नारे के साथ निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ रही ब्रह्माकुमारीज़ ने सामाजिक सेवाओं में अपनी अहम जिम्मेदारी और भूमिका निभा रही है। पर्यावरण से लेकर नशामुक्ति, किसान कल्याण, मूल्य शिक्षा को लेकर अनेक देशव्यापी अभियान और कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

जीवन प्रबंधन

बीके शिवानी दीदी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

खुश रहने के लिए दुनिया को नहीं, अपने मन को बदलना होगा, खुशी बाहर खोजने की वस्तु नहीं, भीतर जगाने की शक्ति है

मैं अपनी खुशी का निर्माता हूं...

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

खुशी कोई बाहरी उपलब्धि नहीं, बल्कि हमारे मन की स्वाभाविक अवस्था है। हम खुशी को पाने के लिए परिस्थितियों, लोगों और वस्तुओं पर निर्भर हो जाते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि खुशी हमारे विचारों की गुणवत्ता से जन्म लेती है। यदि विचार शुद्ध, सकारात्मक और शक्तिशाली हैं, तो जीवन की हर परिस्थिति में भी हम स्थिर और प्रसन्न रह सकते हैं।

खुशी का पहला मंत्र - मेरी हर भावना की जिम्मेदारी मेरी है

जो सोचेंगे, वही महसूस करेंगे; जो महसूस करेंगे, वही बन जाएंगे। हम अक्सर कहते हैं उसने मुझे दुखी कर दिया, परिस्थिति खराब है इसलिए मैं परेशान हूं। लेकिन यह सोच ही हमें निर्बल बनाती है। कोई भी व्यक्ति हमें दुखी नहीं कर सकता, जब तक हम अपने मन में उस विचार को स्वीकार न करें। इसलिए पहला मंत्र है- Responsibility (जिम्मेदारी)। आज से यह स्वीकार करें कि मेरी हर भावना की जिम्मेदारी मेरी है। जैसे ही हम यह स्वीकार कर लेते हैं, हम पीड़ित से सृजनकर्ता (क्रिएटर) बन जाते हैं।

खुशी का दूसरा सीक्रेट - "विचारों की सफाई"

जैसे हम रोज अपने घर की सफाई करते हैं, वैसे ही मन की सफाई भी आवश्यक है। यदि मन में पुराने गिले-शिकवे, तुलना, ईर्ष्या, शिकायतें भरी रहेंगी, तो खुशी टिक नहीं सकती। हर सुबह 5–10 मिनट अपने विचारों को चेक करें। खुद से पूछें- क्या मैं आज किसी के लिए शिकायत लेकर चल रहा हूं? क्या मैं खुद से संतुष्ट हूं? यदि उत्तर नकारात्मक है, तो तुरंत एक सकारात्मक संकल्प लें- मैं शांत आत्मा हूं... मैं प्रेममय आत्मा हूं... मैं परिस्थितियों से ऊपर हूं... जब हम बार-बार ऐसे शक्तिशाली संकल्प लेते हैं, तो मन की प्रोग्रामिंग बदलने लगती है।

तीसरा मंत्र - "अपेक्षाओं को कम करें, स्वीकार्यता बढ़ाएं"

खुशी का सबसे बड़ा शत्रु है – अपेक्षा (Expectation)। हम चाहते हैं कि लोग हमारे अनुसार व्यवहार करें, परिस्थिति हमारे हिसाब से चले। लेकिन जब ऐसा नहीं होता, तो हम दुखी हो जाते हैं। लोग अपनी क्षमता और संस्कारों के अनुसार ही व्यवहार करते हैं। उन्हें बदलने की कोशिश से पहले, उन्हें स्वीकार करना सीखें। जब हम स्वीकार करना सीख लेते हैं, तो मन में प्रतिरोध समाप्त हो जाता है। और जहां प्रतिरोध समाप्त होता है, वहीं से शांति और खुशी का अनुभव शुरू होता है।

चौथा मंत्र - "तुलना छोड़ें, कृतज्ञता अपनाएं"

आज का युग तुलना का युग है। सोशल मीडिया, पड़ोस, रिश्तेदार – हर जगह तुलना चल रही है। तुलना आत्म-सम्मान को कम करती है। इसके बजाय कृतज्ञता (Gratitude) का अभ्यास करें। रोज रात को सोने से पहले तीन बातों के लिए धन्यवाद दें- आज किसने मेरी मदद की? मैंने किसकी मदद की? आज मुझे क्या नया सीखने को मिला? जब हम धन्यवाद की भावना रखते हैं, तो हमारा ध्यान कमी से हटकर समृद्धि पर जाता है। और जहां ध्यान जाता है, ऊर्जा वहीं बहती है।

पांचवां मंत्र - "डिटैच होकर प्रेम करें"

अनासक्ति का अर्थ उदासीनता नहीं है, बल्कि भावनात्मक संतुलन है। जब हम किसी से अत्यधिक आसक्त हो जाते हैं, तो उनकी हर बात से हमारी खुशी प्रभावित होती है। लेकिन यदि हम यह समझ लें कि हर आत्मा अपनी यात्रा पर है, और मैं केवल सहयोगी हूं, नियंत्रक नहीं – तो संबंधों में हल्कापन और सहजता आ जाती है। ऐसा प्रेम, जो स्वतंत्रता देता है, वही सच्ची खुशी देता है।

छठा मंत्र - "मेडिटेशनः खुशी की ऊर्जा का स्रोत"

राजयोग मेडिटेशन केवल आंखें बंद करना नहीं, बल्कि आत्म-चेतना में स्थित होना है। जब हम स्वयं को शरीर नहीं, बल्कि शांत, पवित्र, शक्तिशाली आत्मा मानते हैं, तो हमारी सोच बदल जाती है। प्रतिदिन कुछ समय के लिए यह अनुभव करें- "मैं प्रकाश स्वरूप आत्मा हूं... शांति मेरा स्वभाव है... खुशी मेरी प्राकृतिक अवस्था है..." यह अभ्यास धीरे-धीरे भीतर की कमी, भय और असुरक्षा को समाप्त कर देता है। तब खुशी किसी घटना पर निर्भर नहीं रहती, बल्कि स्वाभाविक रूप से बहने लगती है।

सातवां मंत्र - "जो है, वही पर्याप्त है"

हमारा मन हमेशा और की तलाश में रहता है- और पैसा, और सम्मान, और सुविधा। लेकिन सच्ची खुशी अभी और यहीं में है। जब हम जो है उसे पर्याप्त मान लेते हैं, तभी जीवन में वास्तविक संतोष आता है। संतोष का अर्थ ठहराव नहीं, बल्कि आंतरिक पूर्णता है। जब भीतर पूर्णता होती है, तब बाहर की उपलब्धियां बोनस बन जाती हैं, आवश्यकता नहीं।

आठवां मंत्र - "स्वयं से सकारात्मक संवाद रखें"

हम दिनभर सबसे ज्यादा किससे बात करते हैं? खुद से। लेकिन अक्सर यह संवाद कैसा होता है? मैं यह नहीं कर सकता... मुझसे हमेशा गलती हो जाती है... मेरी किस्मत खराब है...हमारा अंदरूनी संवाद (Self-Talk) ही हमारी भावनाओं का आधार बनता है। यदि हम खुद से कठोर भाषा में बात करेंगे, तो आत्मविश्वास कम होगा और खुशी दूर होती जाएगी। आज से एक नया नियम बनाएं - जब भी मन में नकारात्मक वाक्य आए, उसे तुरंत बदल दें। मैं कमजोर हूं..."मैं सीख रहा हूं, मैं सक्षम हूं। मेरे साथ ही ऐसा क्यों? यह परिस्थिति मुझे मजबूत बनाने आई है। याद रखें, मन बच्चा है। उसे डांटेंगे तो डर जाएगा, प्रेम से समझाएंगे तो खिल उठेगा। खुशी की शुरुआत अपने आप से प्रेमपूर्ण संवाद से होती है।

नौवां मंत्र - "माफ करना सीखें, मुक्त हो जाएं"

जब हम किसी को माफ नहीं करते, तो हम उस व्यक्ति को नहीं, बल्कि खुद को दर्द से बांध लेते हैं। मन में बार-बार वही घटना दोहराते हैं और हर बार खुद को आहत करते हैं। माफ करना यह नहीं कि जो हुआ वह सही था। माफ करना यह है कि मैं इस दर्द को अपने भविष्य का हिस्सा नहीं बनने दूंगा। रोज रात को सोने से पहले मन में संकल्प लें- मैं सभी को माफ करता हूं... और स्वयं को भी माफ करता हूं...। जैसे ही मन बोझ से मुक्त होता है, भीतर हल्कापन आता है और जहां हल्कापन है, वहीं सच्ची खुशी है।

दसवां मंत्र - "सेवा और देने की भावना अपनाएं"

खुशी पाने का सबसे सरल और शक्तिशाली तरीका है- देना। जब हम केवल लेने की सोच रखते हैं- सम्मान, प्यार, सहयोग तो मन हमेशा अपेक्षा में रहता है। लेकिन जब हम देने की भावना से जीते हैं, तो ऊर्जा का प्रवाह बदल जाता है। एक मुस्कान देना, किसी की बात धैर्य से सुन लेना, किसी की प्रशंसा करना, जरूरतमंद की मदद करना, ये छोटे-छोटे कार्य हमारी आत्मा को भर देते हैं।

खुशी कोई लक्ष्य नहीं, बल्कि जीवन जीने की शैली है

खुशी कोई लक्ष्य नहीं, बल्कि जीवन जीने की शैली है। यदि हम अपने विचारों की जिम्मेदारी लें, अपेक्षाओं को कम करें, कृतज्ञता अपनाएं, और मेडिटेशन द्वारा आत्म-चेतना में स्थित हों – तो परिस्थितियां चाहे कैसी भी हों, हम स्थिर और प्रसन्न रह सकते हैं। खुश रहने के लिए दुनिया को नहीं, अपने मन को बदलना होगा। जब मन बदलता है, तो दृष्टिकोण बदलता है, दृष्टिकोण बदलता है, तो अनुभव बदलता है और जब अनुभव बदलता है, तो पूरा जीवन खुशियों का उत्सव बन जाता है। खुशी बाहर खोजने की वस्तु नहीं, भीतर जगाने की शक्ति है।

समस्या- समाधान

- राजयोगी बीके सूरज भाई,
माउंट आबू

जो श्रेष्ठ विचार स्वयं को चाहिए- वही औरों को देते चलें...

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। सबेरे उठ सुंदर विचारों से मन को चार्ज करें। राजयोग के अभ्यास के साथ-साथ सबेरे उठने का नियम बहुत अच्छा है। जब हम उठें तब सुंदर विचारों से मन को चार्ज कर लें। मैं महान आत्मा सभी गुणों, शक्तियों, खजानों से भरपूर हूं। ऐसे कई वैराइटी संकल्प करें। जो लोग 8 बजे, 9 बजे, 10 बजे, कई लोग तो और भी लेट 12 बजे सो कर उठते हैं। उनका सुस्त जीवन सफल जीवन नहीं हो सकता। जिस मनुष्य ने कभी उगते हुए सूरज का दर्शन ही नहीं किया है, उसके भाग्य का सूरज तेजी से अस्त हो जाता है।

भाग्य केवल धन संपदा को नहीं कहते हैं। कोई कहे मेरे पास बहुत धन संपदा है। रात को 1 बजे 2 बजे तक होटलों में घूमना गंदा पीना-खाना, फिर दिन 12 से 2 बजे तक सोया रहना। क्या ये भाग्य है? नहीं, ये दुर्भाग्यवश अज्ञान अंधकार है। इसको कोई भाग्य समझ ले, यह बहुत बड़ी मिस्टेक है। ऐसा भाग्य जल्दी ही साथ छोड़ जाएगा। फिर अस्पतालों केबहुत चक्कर काटने पड़ते हैं।

मनोविकारः मनुष्य को गंदगी में धकेल रहा

मनोविकार, सेक्स मनुष्य को गंदगी में धकेल रहे हैं। मुंबई की कहानी बड़ी वन्डरफुल होती है। एक ही परिवार के बच्चों में इधर लडक़ी का तलाक हुआ, उधर आस्ट्रेलिया में लडक़ेका तलाक हुआ। कारण सेक्सुअल फीलिंग, घमंड जैसे मनोविकार आदि हैं। इस संसार में आज अगर देखें तो 60 प्रतिशत पाप वासनाओं की वजह से ही हो रहे हैं। यह सब पापों का मूल बीज है। इसलिए गीता में भगवान ने कहा- हे अर्जुन, इस काम महाबैरी को जीत। कोई नहीं जानता इस काम को। डॉक्टर, वैज्ञानिकों ने गलत प्रचार कर दिया। अब भगवान आकर कह रहे हैं-इस संसार को यदि संभालना है और अपने जीवन को सुख शांति का भंडार बनाना है तो पवित्र बनो। यहां से पवित्रता ब्रह्मचर्य का जल्द लक्ष्य लें। अन्यथा इसके बिना सरवाइव करना संसार में बहुत कठिन हो जाएगा। वासनाओं की ही वजह से अधिकतर मानसिक रोग बढ़ रहें हैं।

मिले हुए भाग्यशाली जीवन का दुरुपयोग न करें

यदि कोई अपने प्रालब्ध भाग्य यानी पूर्व केअच्छे कर्मों के फल को दुरुपयोगकरता है तो वैसा भाग्य जल्दी ही साथ छोड़ जाता है। किसी केपास पैसा बहुत हो गया तो गंदा खान-पान अपनाकर जीवन गंदा कर लेते हैं, तो पैसा भी साथ छोड़ जाता। अगर पैसा साथ न भी छोड़े तो समय पर पैसा काम नहीं आएगा। ऐसा बहुत दिख रहा है। एक फैक्ट्री मालिक से जब हम मिल रहे थे तो उन्होंने बताया कि अपनी पत्नी केइलाज केलिए तीन करोड़ रुपए लेकर डॉक्टरों केपास बैठा था कि ये ले लो, इसे बचा दो। कोई नहीं बचा सका तो हम सभी सबेरे समय को जरूर सार्थक कर खुद पर ध्यान देंगे। खुद को टाइम देकर नित्य राजयोग काअभ्यास करें। समय पर सोना, समय पर उठना, ये स्वास्थ्य और बुद्धि को श्रेष्ठ बनाने का अच्छा तरीका है।

श्रेष्ठ और महान योगी बनने के लक्षण-

योगी वहीं बन सकते हैं जो सांसारिक इच्छाओं को और सभी विकारों से मुख मोड़ लिया हो। जिसे इस संसार से कुछ नहीं चाहिए। न मान, न धन, न भौतिक जगत में नाम हो जाए मेरा, जो इन सबसे बाहर हो गई आत्मा। वो योग के पथ पर आगे बढ़ती है। जब तक भगवान राजी न हो हम पर। जब तक उसकी कृपा दृष्टि हम पर न पड़ जाए, तब तक भी कोई योगी नहीं बन सकता। जो परमात्मा शिव के दिलतख्तनशीन बनते हैं वो योगी बन जाते हैं। जो परमपिता को राजी कर लेते हैं वो योगी बन जाते हैं और परमात्मा सच्चाई पर, आज्ञाकारियों पर, उसके कार्यों में जो दिल से मदद करते हैं, जो दूसरों को सच्चे दिल से सुख देते हैं। वो योगी बन जाते हैं। जो सुखदाई हैं वो प्रभु को अति प्यारे हैं। आज से मेरे साथ सबकुछ अच्छा होगा। विश्वास में करो। जो हो गया वो भी अच्छा, जो हो रहा है वह बहुत अच्छा। हमारे अच्छे दिन चल रहें हैं वर्तमान हमारा बहुत सुंदर हैं। भविष्य हमारे हाथ में। जो संकल्प हम करते हैं उसकी तरंगे प्रकृति में जाती हैं चारों ओर फैलती हैं।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Feb. 2026
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » प्रधान संपादकः बीके कोमल » संपादकः बीके पुष्पेन्द्र